B.Ed 4th Semester Exam Guide (Optional Course)

Optional Course: 1.4.11, Environmental & Population Education

2 Marks Question

1. What do you mean by Population Fluctuation? জনসংখ্যার অস্থিরতা বলতে কি বোঝেন? जनसंख्या उतार-चढ़ाव से आप क्या समझते हैं? 2018, 2020

Ans: जनसंख्या में उतार-चढ़ाव (Population Fluctuation) का मतलब है समय के साथ जनसंख्या की संख्या या घनत्व में परिवर्तन या उतार-चढ़ाव होना। यह आमतौर पर विभिन्न कारणों के प्रभाव से होता है, जैसे जन्म दर, मृत्यु दर, प्रवासन (माइग्रेशन), और पर्यावरणीय या आर्थिक स्थितियाँ।

जनसंख्या में उतार-चढ़ाव के कारण

1. **जन्म दर और मृत्यु दर:** जनसंख्या की वृद्धि या कमी मुख्य रूप से जन्म दर और मृत्यु दर के अंतर पर निर्भर करती है। यदि जन्म दर मृत्यु दर से अधिक होती है, तो जनसंख्या बढ़ती है, और यदि मृत्यु दर अधिक होती है, तो जनसंख्या घटती है।

2. **प्रवासन:** जब लोग एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में जाते हैं, तो स्थानीय जनसंख्या कम या बढ़ सकती है। प्रवासन अक्सर आर्थिक अवसरों, सामाजिक कारणों या राजनीतिक स्थितियों के कारण होता है।

3. **पर्यावरणीय परिवर्तन:** जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक आपदाएँ, और अन्य पर्यावरणीय समस्याएँ भी जनसंख्या में उतार-चढ़ाव को प्रभावित करती हैं। उदाहरण के लिए, भोजन और पानी की कमी लोगों को स्थानांतरित होने का कारण बन सकती है।

4. **आर्थिक और सामाजिक स्थितियाँ:** आर्थिक विकास, रोज़गार के अवसर, शिक्षा, और स्वास्थ्य सेवा जैसी सामाजिक स्थितियों में परिवर्तन भी जनसंख्या में उतार-चढ़ाव को प्रभावित करता है।

जनसंख्या में उतार-चढ़ाव एक क्षेत्र के सामाजिक और आर्थिक विकास को प्रभावित करता है और योजना और नीतियाँ बनाने के लिए महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है।

www.dascoaching.in

2. What is Pro-Environmental Behaviour? অনুকূল পরিবেশগত অন্তরণ কাকে বলে? पर्यावरण अनुकूल व्यवहार क्या है? **2018, 2021**

Ans: अनुकूल पर्यावरणीय व्यवहार का अर्थ उन कार्यों या गतिविधियों से है जो पर्यावरण की सुरक्षा और संरक्षण में सहायक होते हैं। यह एक ऐसा दृष्टिकोण या कार्यप्रणाली है जिसे व्यक्ति पर्यावरण को नुकसान पहुँचाने के बजाय उसकी रक्षा करने के लिए अपनाते हैं।

<u>अनुकूल पर्यावरणीय व्यवहार के कुछ उदाहरण:</u>

1. **रीसाइक्लिंग:** प्लास्टिक, कागज, और कांच जैसे कचरे को पुन: उपयोग करने की पहल करना।
2. **जल और बिजली का संरक्षण:** पानी की बर्बादी कम करना और ऊर्जा-कुशल उपकरणों का उपयोग करना।
3. **पेड़ लगाना:** नए पेड़ लगाकर पर्यावरण के सुधार में योगदान देना।
4. **नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग:** सौर, पवन, या जलविद्युत जैसे नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग करना।
5. **परिवहन के तरीके बदलना:** साइकिल चलाना, सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करना, या पैदल चलना, जो वाहनों के उपयोग को कम करने और प्रदूषण को घटाने में मदद करता है।

अनुकूल पर्यावरणीय व्यवहार समाज में पर्यावरणीय जागरूकता बढ़ाता है और एक टिकाऊ भविष्य की ओर ले जाता है।

3. Define Migration. পরিব্রাজনের সংজ্ঞা দিন। प्रवासन की परिभाषा दीजिए। **2018, 2020, 2022**

Ans: प्रवासन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से लोग या जानवर एक स्थान से दूसरे स्थान पर चले जाते हैं। यह आमतौर पर एक निश्चित अवधि के लिए या स्थायी रूप से हो सकता है। प्रवासन के कारण विभिन्न हो सकते हैं, जैसे:

1. **आर्थिक:** बेहतर आजीविका, रोजगार या जीवन स्तर में सुधार के लिए।

2. **सामाजिक:** परिवार या दोस्तों के करीब रहने के लिए, या शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँचने के लिए।

3. **राजनीतिक:** युद्ध, उत्पीड़न, या राजनीतिक अस्थिरता के कारण सुरक्षित आश्रय खोजने के लिए।

4. **पर्यावरणीय:** प्राकृतिक आपदाओं, जलवायु परिवर्तन, या अन्य पर्यावरणीय कारकों के कारण नए स्थान पर स्थानांतरित होने के लिए।

प्रवासन एक जटिल सामाजिक प्रक्रिया है जो जनसंख्या संरचना, संस्कृति और अर्थव्यवस्था को प्रभावित करती है।

4. What is meant by Agenda 21? Agenda 21 বলতে কি বোঝেন? एजेंडा 21 से आप क्या समझते हैं? **2018, 2021, 2023, 2024**

Ans: एजेंडा 21 रियो डी जनेरियो में 1992 के संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण शिखर सम्मेलन (पृथ्वी शिखर सम्मेलन) में अपनाई गई एक अंतरराष्ट्रीय योजना है। यह सतत विकास के लिए एक विस्तृत कार्यक्रम है, जो दुनिया भर में पर्यावरण और विकास-संबंधी समस्याओं को हल करने के लिए विभिन्न कदम और रणनीतियाँ निर्धारित करता है।

<u>एजेंडा 21 के मुख्य उद्देश्य और विशेषताएँ:</u>

1. **सतत विकास:** एजेंडा 21 का मुख्य लक्ष्य पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक एवं आर्थिक विकास के बीच संतुलन बनाना है। इसका उद्देश्य प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए लोगों के जीवन स्तर में सुधार करना है।

2. **स्थानीय स्तर पर प्रभावी उपाय:** यह स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कार्यक्रमों के निर्माण और कार्यान्वयन पर जोर देता है। विभिन्न देशों और समुदायों को उनके अपने संदर्भ में कार्रवाई करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

www.dascoaching.in

3. **सामुदायिक भागीदारी:** एजेंडा 21 जनता की सक्रिय भागीदारी के महत्व को पहचानता है। यह सुनिश्चित करता है कि विभिन्न स्तरों की सरकारें, गैर-सरकारी संगठन और आम जनता सभी विकास योजना प्रक्रिया में शामिल हों।

4. **प्रदूषण नियंत्रण और संसाधन प्रबंधन:** पर्यावरण संरक्षण, प्रदूषण नियंत्रण और प्राकृतिक संसाधनों के स्थायी प्रबंधन के लिए नीतियां और रणनीतियाँ परिभाषित की गई हैं।

5. **वित्तीय और तकनीकी सहायता:** विकासशील देशों के लिए तकनीकी सहायता और वित्तपोषण प्रदान करने का महत्व भी एजेंडा 21 का हिस्सा है।

संक्षेप में, एजेंडा 21 प्रगति और सहयोग की एक योजना है जो दुनिया के विभिन्न देशों और लोगों को एक स्थायी भविष्य की ओर मार्गदर्शन करती है।

5. What is Ecofeminism? নারীবাদ বা ইকোফেমিনিজম কাকে বলে? इको-नारीवाद (Ecofeminism) क्या है? **2018, 2022**

Ans: <u>पारिस्थितिक नारीवाद (Ecofeminism) क्या है?</u>

पारिस्थितिक नारीवाद एक आंदोलन और विचारधारा है जो नारीवाद और पर्यावरणवाद को जोड़ती है। यह मानती है कि पुरुष-प्रधान समाज में महिलाएँ और प्रकृति दोनों ही दमन और उत्पीड़न का शिकार हैं, और इन दो दमनकारी ढाँचों के बीच एक संबंध है। पारिस्थितिक नारीवाद महिलाओं की मुक्ति के लिए पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास के महत्व पर जोर देता है।

<u>पारिस्थितिक नारीवाद के मुख्य पहलू:</u>

1. **लिंग और पर्यावरण का संबंध:** पारिस्थितिक नारीवाद का मानना है कि लैंगिक असमानता और पर्यावरणीय समस्याएँ आपस में जुड़ी हुई हैं। महिलाएँ अक्सर पर्यावरण की सुरक्षा और संरक्षण में अग्रणी भूमिका निभाती हैं, लेकिन उन्हें अक्सर उस भूमिका के लिए उचित मान्यता नहीं मिलती।

2. **प्राकृतिक संसाधनों का उचित उपयोग:** पारिस्थितिक नारीवादी प्राकृतिक संसाधनों के उचित उपयोग पर जोर देते हैं और समझते हैं कि पर्यावरणीय स्थिरता के लिए महिलाओं का सशक्तीकरण आवश्यक है।

3. **सामाजिक न्याय:** पारिस्थितिक नारीवाद सामाजिक न्याय, आर्थिक समानता और पर्यावरण संरक्षण के लिए संघर्ष करता है। इसका मानना है कि एक महिला और प्राकृतिक पर्यावरण के प्रति सम्मान होना चाहिए और उनके अधिकारों की रक्षा की जानी चाहिए।

4. **आदतों और संस्कृति में बदलाव:** पारिस्थितिक नारीवादी समाज में मौजूद दमनकारी आदतों और संस्कृति को बदलने के लिए काम करते हैं, जो महिलाओं और प्रकृति के खिलाफ हिंसा और उत्पीड़न को कम करने में मदद करता है।

इस प्रकार, पारिस्थितिक नारीवाद एक एकीकृत दृष्टिकोण प्रदान करता है, जो महिलाओं के अधिकारों और पर्यावरण की सुरक्षा दोनों को समान महत्व देता है।

6. Write the sources of solid waste pollution. বর্জ্যবস্তুর দূষণের উৎসের নাম লিখুন। ठोस अपशिष्ट प्रदूषण के स्रोत लिखिए। **2018, 2021, 2022**

Ans: **<u>यहाँ कचरा प्रदूषण के चार स्रोत दिए गए हैं:</u>**

1. **घरेलू कचरा:** यह रोज़मर्रा के घरेलू कामों से उत्पन्न होता है, जैसे कि खाने के बचे हुए अंश, प्लास्टिक, कागज़, और अन्य कूड़ा-करकट।

2. **औद्योगिक कचरा:** यह औद्योगिक संस्थानों की उत्पादन प्रक्रियाओं से उत्पन्न होने वाला ठोस कचरा है, जिसमें रसायन, धातु और प्लास्टिक शामिल हैं।

3. **कृषि कचरा:** खेती के कामों से उत्पन्न होने वाला कचरा, जैसे कि फसल के अवशेष, उर्वरक और रासायनिक कीटनाशक।

4. **निर्माण और विध्वंस कचरा:** यह निर्माण कार्यों से उत्पन्न होने वाला कचरा है, जैसे कि इमारतों का निर्माण या मरम्मत, जिसमें कंक्रीट, ईंटें और अन्य निर्माण सामग्री शामिल हैं।

7. What do you mean by reproductive health? প্রজননগত স্বাস্থ্য বলতে কি বোঝেন? प्रजनन स्वास्थ्य से आप क्या समझते हैं? **2018, 2020, 2022**

Ans: प्रजनन स्वास्थ्य से तात्पर्य प्रजनन प्रणाली के स्वास्थ्य, उसकी कार्यक्षमता और संबंधित समस्याओं की सुरक्षा से है। यह केवल यौन स्वास्थ्य पर ही नहीं, बल्कि मानसिक, सामाजिक और शारीरिक पहलुओं से भी प्रजनन स्वास्थ्य पर विचार करता है।

<u>प्रजनन स्वास्थ्य के मुख्य पहलू:</u>

1. **सुरक्षा और सही जानकारी:** प्रजनन स्वास्थ्य यह सुनिश्चित करता है कि व्यक्तियों को सही जानकारी और सेवाएँ मिलें, जो उनके यौन और प्रजनन स्वास्थ्य की सुरक्षा में सहायक हों।

2. **योजना और शिक्षा:** इसमें परिवार नियोजन, जन्म नियंत्रण के तरीके, गर्भावस्था की देखभाल और यौन शिक्षा जैसे विषय शामिल हैं, जो स्वस्थ प्रजनन व्यवहार को बढ़ावा देने में मदद करते हैं।

3. **रोगों की रोकथाम:** प्रजनन स्वास्थ्य यौन संचारित रोगों (STIs) की रोकथाम के तरीकों, नियमित स्वास्थ्य जाँच और समय पर चिकित्सा सेवाएँ प्राप्त करने के महत्व पर ज़ोर देता है।

4. **मानसिक स्वास्थ्य:** इसमें मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य भी शामिल है, जो प्रजनन स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है।

इसलिए, प्रजनन स्वास्थ्य व्यक्तियों की जीवनशैली और सामाजिक कल्याण के विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

8. Write two aspects/objectives of Environmental Education. পরিবেশ শিক্ষার দুটি দিক/উদ্দেশ্য লিখুন। पर्यावरण शिक्षा के दो पहलू/उद्देश्य लिखिए। **2019, 2020, 2022, 2023, 2024**

Ans: **<u>पर्यावरण जागरूकता विकसित करने के लिए पर्यावरण शिक्षा के दो पहलू:</u>**

1. **सैद्धांतिक शिक्षा (Theoretical Education):** पर्यावरण शिक्षा छात्रों को प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग, वायु और जल प्रदूषण, और जलवायु परिवर्तन जैसे विभिन्न पर्यावरणीय मुद्दों के बारे में सैद्धांतिक ज्ञान प्रदान करती है। इसके माध्यम से वे पर्यावरणीय समस्याओं और उनके प्रभावों से अवगत होते हैं, जिससे उनकी जागरूकता बढ़ती है।

2. **व्यावहारिक गतिविधियाँ (Practical Activities):** पर्यावरण शिक्षा के माध्यम से छात्र वृक्षारोपण, रीसाइक्लिंग, और स्वच्छता अभियान सहित विभिन्न व्यावहारिक गतिविधियों में भाग लेते हैं। इस प्रकार की गतिविधियाँ उन्हें अपने वास्तविक जीवन में पर्यावरण की रक्षा के लिए जिम्मेदारी और जागरूकता विकसित करने में मदद करती हैं।

9. Explain the concept of environmental pollution. পরিবেশ দূষণের ধারণাটি ব্যাখ্যা করুন। पर्यावरण प्रदूषण की अवधारणा समझाइए। **2019, 2020, 2021**

Ans: <u>पर्यावरण प्रदूषण:</u> पर्यावरण प्रदूषण मानव-निर्मित या प्राकृतिक गतिविधियों के परिणामस्वरूप पर्यावरण में प्रदूषित पदार्थों का जुड़ना है, जो प्राकृतिक पर्यावरण की गुणवत्ता को नुकसान पहुँचाता है। यह पर्यावरण के विभिन्न घटकों—वायु, जल, मिट्टी, और पर्यावरण की जैव विविधता—की गुणवत्ता को कम करता है और मानव स्वास्थ्य, जीव-जंतुओं और प्रकृति पर नकारात्मक प्रभाव डालता है।

<u>पर्यावरण प्रदूषण के प्रमुख घटक:</u>

1. **वायु प्रदूषण**: उद्योगों, वाहनों और अन्य स्रोतों से निकलने वाली हानिकारक गैसें, धूल और कण हवा को प्रदूषित करते हैं। इससे श्वसन संबंधी रोग, हृदय रोग और अन्य स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं।

2. **जल प्रदूषण:** नदियों, झीलों और समुद्रों में रसायनों, कचरे और अन्य प्रदूषित पदार्थों की उपस्थिति। यह जलीय जीवन और मनुष्यों के पीने के पानी की गुणवत्ता को नुकसान पहुँचाता है।

3. **मृदा प्रदूषण:** औद्योगिक कचरे, कृषि रसायनों और प्लास्टिक कचरे के कारण मिट्टी की गुणवत्ता खराब हो जाती है। इसका कृषि उत्पादन और मिट्टी की जैव विविधता पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है।

पर्यावरण प्रदूषण के प्रभाव:

1. **मानव स्वास्थ्य:** प्रदूषण के कारण विभिन्न बीमारियों और स्वास्थ्य समस्याओं में वृद्धि होती है, जैसे दमा, हृदय रोग और कैंसर।

2. **जैव विविधता का नुकसान:** पर्यावरण प्रदूषण के कारण कई प्रजातियाँ खतरे में पड़ जाती हैं और यह पारिस्थितिकी तंत्र (ecosystem) का संतुलन बिगाड़ देता है।

3. **जलवायु परिवर्तन**: कार्बन डाइऑक्साइड और मीथेन जैसी विभिन्न प्रदूषित गैसें वायुमंडल में जमा होती हैं, जो जलवायु परिवर्तन का एक प्रमुख कारण है।

निष्कर्ष: पर्यावरण प्रदूषण एक गंभीर समस्या है जो हमारे स्वास्थ्य, प्रकृति और आने वाली पीढ़ियों के लिए खतरा पैदा करती है। इससे बचाव और एक स्वस्थ पर्यावरण बनाए रखने के लिए जागरूकता बढ़ाना, टिकाऊ तरीकों को अपनाना और प्रभावी नीतियों की आवश्यकता है।

10. What do you mean by population distribution? জনসংখ্যা বন্টন বলতে আপনি কী বোঝেন? जनसंख्या वितरण से आप क्या समझते हैं? **2019, 2021**

Ans: जनसंख्या वितरण का अर्थ किसी विशिष्ट क्षेत्र में लोगों की संख्या और उनके स्थान से है। यह बताता है कि किसी देश या क्षेत्र की जनसंख्या भौगोलिक रूप से कैसे फैली हुई है और विभिन्न क्षेत्रों में जनसंख्या का घनत्व क्या है।

जनसंख्या वितरण की मुख्य विशेषताएं:

1. **भौगोलिक स्थिति:** जनसंख्या विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों, जैसे शहरों, गांवों, पहाड़ों, नदी के किनारों और रेगिस्तानों में कैसे वितरित है।

2. **जनसंख्या घनत्व:** प्रति इकाई भूमि (जैसे प्रति वर्ग किलोमीटर) में लोगों की संख्या, जो किसी क्षेत्र में जनसंख्या के दबाव को दर्शाती है।

3. **आर्थिक गतिविधियाँ:** जनसंख्या वितरण अक्सर विभिन्न आर्थिक गतिविधियों पर निर्भर करता है, जैसे औद्योगिक क्षेत्र, कृषि क्षेत्र और शहर के केंद्र।

4. **सामाजिक और सांस्कृतिक विविधता:** विभिन्न क्षेत्रों में जनसंख्या का वितरण सांस्कृतिक और सामाजिक विविधता का प्रतिनिधित्व करता है, जैसे भाषा, धर्म और जीवन शैली।

जनसंख्या वितरण एक महत्वपूर्ण भौगोलिक और सामाजिक अवधारणा है जो किसी देश या क्षेत्र की विकास योजना, बुनियादी ढांचे के निर्माण और सार्वजनिक सेवाएं प्रदान करने में सहायक होती है। यह जनसंख्या की स्थानीय जरूरतों को समझने और संसाधनों का प्रबंधन करने में मदद करती है।

11. What is meant by sustainable development? স্থিতিশীল উন্নয়ন বলতে আপনি কী বোঝেন? सतत विकास से आप क्या समझते हैं? **2019, 2021**

Ans: सतत विकास एक ऐसी विकास प्रक्रिया है जो भविष्य की पीढ़ियों की अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने की क्षमता से समझौता किए बिना वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करती है। इसका मुख्य लक्ष्य पर्यावरण, समाज और अर्थव्यवस्था के बीच संतुलन बनाए रखना है।

<u>सतत विकास के मुख्य पहलू:</u>

1. **पर्यावरण संरक्षण:** पानी, मिट्टी और जैव विविधता जैसे प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करना, ताकि भविष्य में उनका सही ढंग से उपयोग किया जा सके।

2. **सामाजिक समानता:** समाज के सभी सदस्यों के लिए समान अवसर और अधिकार सुनिश्चित करना, खासकर गरीबी कम करने और लैंगिक समानता पर ध्यान देना।

3. **आर्थिक विकास:** ऐसा टिकाऊ आर्थिक विकास सुनिश्चित करना जो दीर्घकालिक और स्थिर हो, जिससे सभी के लिए रोजगार पैदा हो और जीवन स्तर में सुधार हो।

4. **किफायती और नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग:** ऊर्जा के उपयोग में नवीकरणीय स्रोतों पर ध्यान केंद्रित करना, ताकि कार्बन उत्सर्जन कम हो और पर्यावरण पर दबाव कम हो।

www.dascoaching.in

सतत विकास एक समग्र दृष्टिकोण है, जो पर्यावरण, अर्थव्यवस्था और समाज के विकास के बीच एक अच्छा संबंध स्थापित करता है। यह एक स्वस्थ, सुरक्षित और टिकाऊ भविष्य सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है।

12. What is population policy? জনসংখ্যা নীতি কাকে বলে? जनसंख्या नीति क्या है? **2019, 2020, 2022**

Ans: जनसंख्या नीति एक सरकारी योजना और रणनीति है जो किसी देश की जनसंख्या वृद्धि, कमी और पर्यावरण पर इसके प्रभाव को नियंत्रित करने के लिए बनाई जाती है। इस नीति का मुख्य उद्देश्य जनसंख्या की मात्रा और गुणवत्ता में सुधार करना है, जो सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय स्थिरता सुनिश्चित करने में सहायक है।

<u>जनसंख्या नीति की मुख्य विशेषताएं:</u>

1. **जनसंख्या वृद्धि नियंत्रण:** जन्म दर को कम करके और परिवार नियोजन एवं जन्म नियंत्रण के तरीकों को बढ़ावा देकर असामान्य जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करना।

2. **स्वास्थ्य और शिक्षा का विकास:** स्वास्थ्य सेवाओं, विशेषकर मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य और शिक्षा का विकास सुनिश्चित करना, ताकि लोगों को सही जानकारी मिल सके और वे स्वस्थ जीवन जी सकें।

3. **आर्थिक अवसर पैदा करना:** रोजगार, आय के अवसर और सामाजिक सुरक्षा प्रणालियों का निर्माण करना, जो लोगों के जीवन स्तर को बेहतर बनाने में सहायक हैं।

4. **सामाजिक न्याय और समानता:** लैंगिक समानता और मानवाधिकारों की सुरक्षा सुनिश्चित करना, ताकि समाज के सभी सदस्य अपने अधिकारों और अवसरों का आनंद ले सकें।

जब एक जनसंख्या नीति को प्रभावी ढंग से लागू किया जाता है, तो यह समाज के विकास और स्थिरता को सुनिश्चित करने में मदद करती है।

www.dascoaching.in

13. Write down two characteristics of population education. জনসংখ্যা শিক্ষার দুটি বৈশিষ্ট্য লিখুন। जनसंख्या शिक्षा की दो विशेषताएँ लिखिए। **2019, 2020, 2022**

Ans: <u>two characteristics of population education</u>

1. सामाजिक और सांस्कृतिक प्रासंगिकता: जनसंख्या शिक्षा समाज के विभिन्न स्तरों जैसे जन्म दर, मृत्यु दर, परिवार नियोजन और स्वास्थ्य से जुड़ी है। यह समाज के सांस्कृतिक और सामाजिक संदर्भ को ध्यान में रखकर विकसित की जाती है, जिससे छात्रों को वास्तविक जीवन की समस्याओं को समझने का अवसर मिलता है।

2. बहु-विषयक दृष्टिकोण: जनसंख्या शिक्षा विभिन्न विषयों, जैसे समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र और पर्यावरण विज्ञान का एक संयोजन है। यह विभिन्न दृष्टिकोणों से जनसंख्या की समस्याओं का विश्लेषण करती है और समाधान खोजने में मदद करती है।

14. What is meant by environmental management? পরিবেশ ব্যবস্থাপনা বলতে কী বোঝেন? पर्यावरण प्रबंधन से आप क्या समझते हैं? **2019, 2021**

Ans: पर्यावरण प्रबंधन का तात्पर्य पर्यावरण की सुरक्षा, संरक्षण और विकास के लिए नियोजित और संगठित गतिविधियों के संग्रह से है। इसका उद्देश्य मानवीय गतिविधियों से उत्पन्न होने वाली पर्यावरणीय समस्याओं की पहचान करना और उनका समाधान खोजना है।

<u>पर्यावरण प्रबंधन के मुख्य पहलू हैं:</u>

1. **पर्यावरण योजना:** पर्यावरण की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए नीतियों और योजनाओं का निर्माण करना।

2. **संसाधन प्रबंधन:** प्राकृतिक संसाधनों के उचित उपयोग और संरक्षण को सुनिश्चित करना।

3. **प्रदूषण नियंत्रण:** औद्योगिक, घरेलू और अन्य स्रोतों से उत्पन्न होने वाले प्रदूषण को कम करने के लिए प्रभावी उपाय करना।

www.dascoaching.in

4. **जागरूकता बढ़ाना:** पर्यावरण संरक्षण और प्रबंधन के बारे में जनता के बीच जागरूकता बढ़ाना।

5. **निगरानी और मूल्यांकन:** पर्यावरणीय परिवर्तनों और प्रबंधन गतिविधियों के प्रभावों की निगरानी और मूल्यांकन करना।

पर्यावरण प्रबंधन यह सुनिश्चित करता है कि प्राकृतिक संसाधनों का सही ढंग से उपयोग हो और पर्यावरण का स्वास्थ्य और स्थिरता बनी रहे।

15. Write two importances of Population Education. জনসংখ্যা শিক্ষার দুটি গুরুত্ব লিখুন। जनसंख्या शिक्षा के दो महत्व लिखिए। **2023, 2024**

Ans: <u>जनसंख्या शिक्षा के दो प्रमुख लाभ:</u>

1. **परिवार नियोजन और जन्म नियंत्रण:** जनसंख्या शिक्षा परिवार नियोजन और जन्म नियंत्रण के विभिन्न तरीकों के बारे में जागरूकता बढ़ाती है। यह लोगों को सही जानकारी देती है, जिससे वे अपने और अपने परिवार के लिए सही निर्णय ले सकें। इससे जनसंख्या वृद्धि दर को नियंत्रित करने में मदद मिलती है।

2. **स्वास्थ्य जागरूकता में वृद्धि:** जनसंख्या शिक्षा से मातृ स्वास्थ्य, शिशु स्वास्थ्य और यौन स्वास्थ्य जैसे स्वास्थ्य संबंधी विषयों के बारे में जागरूकता बढ़ती है। यह स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाने में मदद करता है और लोगों को बीमारियों से बचाव के लिए सही कदम उठाने में सहायक होता है।

16. State two ways to develop environmental awareness among students. শিক্ষার্থীদের মধ্যে পরিবেশ সচেতনতা গড়ে তোলার দুটি উপায় লিখুন। छात्रों में पर्यावरण जागरूकता बढ़ाने के दो उपाय लिखिए। **2023, 2024**

Ans: <u>छात्रों में पर्यावरण जागरूकता बढ़ाने के दो तरीके:</u>

1. **पाठ्यक्रम में पर्यावरण संबंधी विषयों को शामिल करना:** पर्यावरण संरक्षण, जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण-अनुकूल व्यवहार से संबंधित विषयों को पाठ्यक्रम में शामिल करना। इससे छात्रों को प्रारंभिक स्तर से ही पर्यावरण के मुद्दों के बारे में जागरूकता विकसित करने में मदद मिलती है।

2. **प्रकृति और पर्यावरण से संबंधित गतिविधियाँ:** छात्रों के लिए बाहरी भ्रमण, वृक्षारोपण और पर्यावरण संरक्षण से संबंधित कार्यशालाएं या परियोजनाएं आयोजित करना। ये गतिविधियाँ वास्तविक दुनिया के अनुभवों के माध्यम से उनकी पर्यावरण जागरूकता को बढ़ाने में मदद करती हैं।

17. Define environmentally friendly behaviours. পরিবেশ বান্ধব ব্যবহার-এর সংজ্ঞা লিখুন। पर्यावरण अनुकूल व्यवहार की परिभाषा दीजिए। **2023, 2024**

Ans: पर्यावरण-हितैषी उपयोग का अर्थ उन व्यवहारों या गतिविधियों से है जो पर्यावरण को होने वाले नुकसान को कम करते हैं और प्राकृतिक संसाधनों के उचित उपयोग में सहायक होते हैं। इन्हें एक स्थायी जीवन शैली के हिस्से के रूप में अपनाया जाता है, जिसका उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण और विकास सुनिश्चित करना है।

<u>पर्यावरण-हितैषी उपयोग के कुछ उदाहरण:</u>

1. **नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग:** सौर, पवन और जलविद्युत जैसी नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग करना, जो कार्बन उत्सर्जन को कम करने में सहायक है।

2. **पुनःउपयोग और रीसाइक्लिंग:** कागज, प्लास्टिक, कांच और धातु का पुनःउपयोग और रीसाइक्लिंग करना, जिससे कचरा कम होता है और प्राकृतिक संसाधनों की आवश्यकता घटती है।

3. **जल और बिजली का संरक्षण:** पानी की बर्बादी रोकना और ऊर्जा-बचत करने वाले उपकरणों का उपयोग करके पर्यावरण पर दबाव को कम करना।

4. **हरित परिवहन व्यवस्था:** साइकिल चलाना, सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करना, या इलेक्ट्रिक वाहनों जैसे पर्यावरण-हितैषी वाहनों का उपयोग करना।

5. **सचेत भोजन:** स्थानीय और मौसमी खाद्य पदार्थों का चयन करना और भोजन की बर्बादी को कम करने का प्रयास करना।

www.dascoaching.in

पर्यावरण-हितैषी उपयोग न केवल पर्यावरण के स्वास्थ्य में सुधार करता है, बल्कि यह एक स्वस्थ और स्थायी भविष्य सुनिश्चित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

18. Write two ways to control population explosion. জনসংখ্যা বিস্ফোরণ নিয়ন্ত্রনের দুটি উপায় লিখুন। जनसंख्या विस्फोट नियंत्रित करने के दो उपाय लिखिए।**2023, 2024**

Ans: <u>जनसंख्या विस्फोट को नियंत्रित करने के दो तरीके यहाँ दिए गए हैं:</u>

1. **परिवार नियोजन और शिक्षा:** परिवार नियोजन सेवाओं और शिक्षा के माध्यम से लोगों में जागरूकता बढ़ाना बहुत ज़रूरी है। लोगों को जन्म नियंत्रण के तरीकों, स्वस्थ जीवन शैली और बच्चों की संख्या निर्धारित करने के बारे में जानकारी दी जानी चाहिए। यह परिवारों को उनके आकार और संरचना के लिए सही योजना बनाने में मदद करता है, जिससे जनसंख्या वृद्धि दर को कम करने में सहायता मिलती है।

2. **मातृ स्वास्थ्य और स्वास्थ्य सेवा में सुधार:** जनसंख्या विस्फोट को नियंत्रित करने में मातृ और प्रजनन स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार भी महत्वपूर्ण है। गर्भावस्था के दौरान महिलाओं के लिए स्वास्थ्य सेवाओं तक आसान पहुँच और उनकी गुणवत्ता में सुधार सुनिश्चित करने से जन्म दर कम हो सकती है और परिवारों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार हो सकता है।

19. Write two importances of sustainable development. সুস্থিত উন্নয়নের দুটি গুরুত্ব লিখুন। सतत विकास के दो महत्व लिखिए। **2023, 2024**

Ans: <u>सतत विकास के दो महत्व:</u>

1. **पर्यावरण संरक्षण:** सतत विकास पर्यावरण के प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षित और बहाल करने में मदद करता है, जो भविष्य की पीढ़ियों के लिए एक स्वस्थ और टिकाऊ वातावरण सुनिश्चित करता है। यह जैव विविधता की रक्षा, वायु और जल की गुणवत्ता में सुधार, और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने में सहायक है।

www.dascoaching.in

2. **दीर्घकालिक आर्थिक विकास:** सतत विकास उन नीतियों और गतिविधियों को प्राथमिकता देता है जो दीर्घकालिक आर्थिक विकास सुनिश्चित करती हैं। यह संसाधनों के संतुलित उपयोग और नवीकरणीय ऊर्जा पर जोर देता है, जो गरीबी को कम करने, रोजगार बढ़ाने और आर्थिक स्थिरता बनाए रखने में सहायक है।

20. Write two importance of Women Empowerment. নারীর ক্ষমতায়নের দুটি গুরুত্ব লিখুন। महिला सशक्तिकरण के दो महत्व लिखिए। **2023, 2024**

Or, Show two importances of women empowerment. নারী ক্ষমতায়নের দুটি গুরুত্ব দেখান। महिला सशक्तिकरण के दो महत्व दिखाएं। **2025**

Ans: <u>महिला सशक्तिकरण का महत्व</u>

1. **आर्थिक विकास:** महिला सशक्तिकरण कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ाता है, जो समग्र अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देता है। जब महिलाओं को शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और रोजगार के अवसर मिलते हैं, तो वे अपने परिवार की वित्तीय स्थिरता को बढ़ाने में सक्षम होती हैं, जो राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के विकास में सहायक होता है।

2. **सामाजिक समानता:** महिला सशक्तिकरण समाज में लैंगिक भेदभाव को कम करता है और महिलाओं के अधिकारों और गरिमा को सुनिश्चित करता है। यह पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए समान अवसर पैदा करता है, जो एक न्यायपूर्ण और समतावादी समाज के निर्माण में मदद करता है।

21. Write two scopes of population education. জনসংখ্যা শিক্ষার দুটি পরিধি লেখো। जनसंख्या शिक्षा के दो कार्यक्षेत्र लिखिए। **2025**

Ans: भूमिका: जनसंख्या शिक्षा एक ऐसी शैक्षिक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति और समाज जनसंख्या की गतिशीलता, उसके कारणों और उसके सामाजिक-आर्थिक प्रभावों के प्रति जागरूक होते हैं। यह केवल जन्म-नियंत्रण तक सीमित नहीं है, बल्कि जीवन स्तर में सुधार का एक माध्यम है।

<u>जनसंख्या शिक्षा के दो महत्वपूर्ण क्षेत्र (Scopes):</u>

1. **जनसांख्यिकी और गतिशीलता (Demography and Dynamics):** जनसंख्या शिक्षा का एक मुख्य क्षेत्र जनसंख्या के आकार, वृद्धि, वितरण और संरचना का वैज्ञानिक विश्लेषण है। इसमें जन्म दर, मृत्यु दर, प्रवास (Migration) और लिंगानुपात से संबंधित ज्ञान शामिल है। यह क्षेत्र छात्रों को यह समझने में मदद करता है कि किसी देश की जनसंख्या कैसे बदल रही है और इसके भविष्य में क्या प्रभाव हो सकते हैं।
2. **परिवार और सामाजिक जीवन (Family and Social Life):** यह क्षेत्र परिवार के आकार और व्यक्तिगत व सामाजिक कल्याण के बीच संबंधों पर जोर देता है। इसमें नियोजित परिवार गठन, प्रजनन स्वास्थ्य और जीवन स्तर (स्वास्थ्य, पोषण और आवास) में सुधार के विषयों को प्राथमिकता दी जाती है। यह छात्रों में जिम्मेदार पारिवारिक व्यवहार की मानसिकता विकसित करता है।

निष्कर्ष: निष्कर्षतः, जनसंख्या शिक्षा का दायरा अत्यंत व्यापक है जो केवल सांख्यिकीय आंकड़ों तक सीमित नहीं है। यह व्यक्तिगत जिम्मेदारी और राष्ट्रीय विकास के बीच समन्वय स्थापित कर एक स्वस्थ और संतुलित समाज के निर्माण में सहायता करती है।

22. Mention two importance of Environmental behaviours of a person. একজন ব্যক্তির পরিবেশগত আচরণের দুটি গুরুত্ব উল্লেখ করো। किसी व्यक्ति के पर्यावरणीय व्यवहार के दो महत्वों का उल्लेख कीजिए। **2025**

Ans: भूमिका: पर्यावरणीय व्यवहार से तात्पर्य पर्यावरण की सुरक्षा और सुधार के प्रति किसी व्यक्ति के सकारात्मक दृष्टिकोण और सक्रिय भागीदारी से है। ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन के वर्तमान युग में, मनुष्य का जागरूक व्यवहार ही पृथ्वी को सुंदर बनाए रख सकता है।

पर्यावरणीय व्यवहार का महत्व:

1. **प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण:** व्यक्ति का पर्यावरण के अनुकूल व्यवहार (जैसे— अपव्यय रोकना, संसाधनों का पुन: उपयोग या पुनर्चक्रण) प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव कम करता है। जब एक जागरूक व्यक्ति बिजली, पानी या ईंधन की बचत करता है, तो वह परोक्ष रूप से अगली पीढ़ी के लिए संसाधनों को सुरक्षित रखने में मदद करता है। इससे पारिस्थितिकी तंत्र का संतुलन बना रहता है।
2. **पर्यावरण प्रदूषण नियंत्रण और स्वास्थ्य रक्षा:** दैनिक आदतें— जैसे प्लास्टिक के उपयोग से बचना, कूड़े को निर्धारित स्थान पर फेंकना और वृक्षारोपण करना— पर्यावरण की गुणवत्ता बनाए रखने में मदद करती हैं। प्रदूषण मुक्त वातावरण न केवल प्रकृति के लिए, बल्कि मानव स्वास्थ्य और रोगमुक्त जीवन के लिए भी अत्यंत आवश्यक है। व्यक्तिगत स्तर पर सही व्यवहार सामूहिक रूप से पर्यावरण प्रदूषण को कम करने में बड़ी भूमिका निभाता है।

निष्कर्ष: निष्कर्षतः, व्यक्ति का स्वस्थ पर्यावरणीय व्यवहार केवल एक जिम्मेदारी नहीं, बल्कि एक नैतिक कर्तव्य है। बी.एड. पाठ्यक्रम में शामिल यह विषय छात्रों में ऐसे मूल्यों को विकसित करता है, जो एक स्वस्थ और संधारणीय (Sustainable) भविष्य सुनिश्चित करने में सक्षम हैं।

23. State two pro-environmental behaviours of a person. একজন ব্যক্তির দুটি পরিবেশ-বান্ধব আচরণের কথা উল্লেখ করো। किसी व्यक्ति के दो पर्यावरण-अनुकूल व्यवहारों को बताइए। **2025**

Ans: प्रस्तावना: पर्यावरण के अनुकूल व्यवहार से तात्पर्य उन सचेत कार्यों से है जो प्राकृतिक पर्यावरण के क्षरण को रोकने और पारिस्थितिकी तंत्र का संतुलन बनाए रखने में मदद करते हैं। वर्तमान वैश्विक पर्यावरणीय संकट का सामना करने के लिए व्यक्तिगत स्तर पर सकारात्मक जीवनशैली अपनाना अत्यंत आवश्यक है।

<u>व्यक्ति के दो पर्यावरण-अनुकूल व्यवहार:</u>

1. **अपशिष्ट प्रबंधन और 3Rs सिद्धांत का प्रयोग:** एक जागरूक व्यक्ति के रूप में, घरेलू कचरे को जैविक और अजैविक—इन दो श्रेणियों में अलग करना एक प्रमुख पर्यावरण-अनुकूल कार्य है। इसके अलावा, संसाधनों के संरक्षण के लिए 3Rs सिद्धांत यानी **कम करना (Reduce), पुन: उपयोग करना (Reuse) और पुनर्चक्रण (Recycle)** का पालन करना आवश्यक है। उदाहरण के तौर पर, एकल-उपयोग वाले प्लास्टिक (Single-use plastic) का त्याग करना और पुरानी वस्तुओं के वैकल्पिक उपयोग के माध्यम से पर्यावरण प्रदूषण को कम करना संभव है।
2. **ऊर्जा की बचत और वैकल्पिक स्रोतों का उपयोग:** आवश्यकता न होने पर लाइट, पंखे या इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को बंद रखना और ऊर्जा की बर्बादी को रोकना पर्यावरण के लिए बहुत सकारात्मक है। इसके अतिरिक्त, जीवाश्म ईंधन के उपयोग को कम करना और पर्यावरण के अनुकूल या गैर-पारंपरिक ऊर्जा (जैसे: सौर ऊर्जा) के उपयोग को प्रोत्साहित करना चाहिए। दैनिक आवागमन के लिए निजी वाहनों के बजाय सार्वजनिक परिवहन या साइकिल का उपयोग करना कार्बन उत्सर्जन को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

निष्कर्ष: अंत में, यह कहा जा सकता है कि व्यक्ति के ये छोटे-छोटे बदलाव ही बड़े स्तर पर पृथ्वी को रहने योग्य बनाते हैं। पर्यावरण शिक्षा का मुख्य उद्देश्य छात्रों में इस प्रकार के जिम्मेदार व्यवहार को विकसित करना है, ताकि भविष्य की पीढ़ियों को एक स्वस्थ और हरित पृथ्वी उपहार में मिल सके।

24. Write two ways of sustainable development. টেকসই উন্নয়নের দুটি উপায় লেখো। सतत विकास के दो तरीके लिखिए। **2025**

Ans: भूमिका: सतत विकास (Sustainable Development) विकास की वह प्रक्रिया है जो वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को भविष्य की पीढ़ियों की अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने की क्षमता से समझौता किए बिना पूरा करती है। इसका मुख्य लक्ष्य पर्यावरण संतुलन बनाए रखते हुए आर्थिक और सामाजिक प्रगति प्राप्त करना है।

<u>सतत विकास के दो मुख्य उपाय:</u>

1. **नवीकरणीय ऊर्जा के उपयोग में वृद्धि:** जीवाश्म ईंधन (कोयला, खनिज तेल) का अत्यधिक उपयोग पर्यावरण को भारी नुकसान पहुँचाता है। इसके विकल्प के रूप में सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा और जलविद्युत जैसे नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग बढ़ाना आवश्यक है। ऊर्जा के ये स्रोत अटूट और पर्यावरण के अनुकूल हैं, जो दीर्घकालिक विकास की नींव रखते हैं।
2. **संसाधन संरक्षण और '3-R' नीति का अनुप्रयोग:** प्राकृतिक संसाधनों का सीमित उपयोग और बर्बादी को रोकना सतत विकास की प्रमुख कुंजी है। इस संदर्भ में, **Reduce** (उपयोग कम करना), **Reuse** (पुनः उपयोग) और **Recycle** (पुनर्चक्रण) — इन तीन सिद्धांतों के सही कार्यान्वयन के माध्यम से कचरे की मात्रा को कम करना और प्राकृतिक संसाधनों के स्थायित्व को बढ़ाना संभव है।

निष्कर्ष: अंत में, यह कहा जा सकता है कि सतत विकास केवल एक सैद्धांतिक अवधारणा नहीं है, बल्कि यह पृथ्वी के अस्तित्व की रक्षा के लिए एक अनिवार्य रणनीति है। पर्यावरण जागरूकता और नियोजित संसाधन उपयोग के माध्यम से ही हम एक सुंदर और सुरक्षित भविष्य सुनिश्चित कर सकते हैं।

25. Write two points of population policy of Government of India in Year 2000. ২০০০ সালে ভারত সরকারের জনসংখ্যা নীতির দুটি পয়েন্ট লেখো। वर्ष 2000 में भारत सरकार की जनसंख्या नीति के दो बिंदु लिखिए। **2025**

Ans: भूमिका: सतत विकास (Sustainable Development) विकास की वह प्रक्रिया है जो वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को भविष्य की पीढ़ियों की अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने की क्षमता से समझौता किए बिना पूरा करती है। इसका मुख्य लक्ष्य पर्यावरण संतुलन बनाए रखते हुए आर्थिक और सामाजिक प्रगति प्राप्त करना है।

<u>सतत विकास के दो मुख्य उपाय:</u>

1. **नवीकरणीय ऊर्जा के उपयोग में वृद्धि:** जीवाश्म ईंधन (कोयला, खनिज तेल) का अत्यधिक उपयोग पर्यावरण को भारी नुकसान पहुँचाता है। इसके विकल्प के रूप में सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा और जलविद्युत जैसे नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग बढ़ाना आवश्यक है। ऊर्जा के ये स्रोत अटूट और पर्यावरण के अनुकूल हैं, जो दीर्घकालिक विकास की नींव रखते हैं।
2. **संसाधन संरक्षण और '3-R' नीति का अनुप्रयोग:** प्राकृतिक संसाधनों का सीमित उपयोग और बर्बादी को रोकना सतत विकास की प्रमुख कुंजी है। इस संदर्भ में, **Reduce** (उपयोग कम करना), **Reuse** (पुनः उपयोग) और **Recycle** (पुनर्चक्रण) — इन तीन सिद्धांतों के सही कार्यान्वयन के माध्यम से कचरे की मात्रा को कम करना और प्राकृतिक संसाधनों के स्थायित्व को बढ़ाना संभव है।

निष्कर्ष: अंत में, यह कहा जा सकता है कि सतत विकास केवल एक सैद्धांतिक अवधारणा नहीं है, बल्कि यह पृथ्वी के अस्तित्व की रक्षा के लिए एक अनिवार्य रणनीति है। पर्यावरण जागरूकता और नियोजित संसाधन उपयोग के माध्यम से ही हम एक सुंदर और सुरक्षित भविष्य सुनिश्चित कर सकते हैं।

26. Define reproductive health. প্রজনন স্বাস্থ্যের সংজ্ঞা দাও। प्रजनन स्वास्थ्य को परिभाषित कीजिए। **2025**

Ans: प्रस्तावना: सामान्य रूप से प्रजनन स्वास्थ्य का अर्थ केवल रोग या अस्वस्थता की अनुपस्थिति नहीं है, बल्कि यह प्रजनन प्रक्रिया से संबंधित शारीरिक, मानसिक और सामाजिक कल्याण की एक समग्र अवस्था को दर्शाता है। जनसंख्या शिक्षा के एक अभिन्न अंग के रूप में प्रजनन स्वास्थ्य अत्यंत महत्वपूर्ण है।

मुख्य चर्चा: विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार, प्रजनन स्वास्थ्य प्रजनन प्रणाली के कार्यों और प्रक्रियाओं से संबंधित सभी मामलों में केवल बीमारी या दुर्बलता की अनुपस्थिति नहीं, बल्कि शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रूप से पूर्णतः स्वस्थ होने की स्थिति है।

<u>एक प्रजनन रूप से स्वस्थ व्यक्ति की विशेषताएं निम्नलिखित हैं:</u>

- वे एक जिम्मेदार, सुरक्षित और संतोषजनक यौन जीवन जीने की क्षमता रखते हैं।
- उनमें संतानोत्पत्ति की क्षमता होती है और वे यह निर्णय लेने के लिए स्वतंत्र होते हैं कि उन्हें कब और कितने अंतराल पर संतान चाहिए।
- उन्हें प्रजनन संबंधी सही जानकारी और उच्च गुणवत्ता वाली चिकित्सा सेवाएं प्राप्त करने का अधिकार होता है।

पश्चिम बंगाल शिक्षक शिक्षण विश्वविद्यालय (BSAEU) के पाठ्यक्रम के अनुसार, प्रजनन स्वास्थ्य शिक्षा का मुख्य लक्ष्य सुरक्षित मातृत्व सुनिश्चित करना, शिशु मृत्यु दर को रोकना और यौन संचारित रोगों के बारे में जागरूकता बढ़ाना है।

निष्कर्ष: अंत में यह कहा जा सकता है कि प्रजनन स्वास्थ्य केवल एक व्यक्तिगत विषय नहीं है, बल्कि यह एक स्वस्थ समाज और उन्नत राष्ट्र की रीढ़ है। प्रजनन स्वास्थ्य की सही समझ जनसंख्या विस्फोट को रोकने और गुणवत्तापूर्ण जीवनशैली बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

5 Marks Question

1. Discuss the role of education in promoting sustainable development. স্থিতিশীল উন্নয়নের বিকাশে শিক্ষার ভূমিকা আলোচনা করুন। सतत विकास को बढ़ावा देने में शिक्षा की भूमिका पर चर्चा कीजिए। **2018, 2020, 2022, 2025**

Ans: भूमिका: सतत विकास (Sustainable Development) एक ऐसी अवधारणा है जो वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों के लिए आवश्यक संसाधनों के संरक्षण और संतुलित उपयोग को सुनिश्चित करती है। शिक्षा इस संबंध में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, क्योंकि यह लोगों को जागरूक, कुशल और जिम्मेदार नागरिक बनने में मदद करती है। शिक्षा लोगों को वह ज्ञान, कौशल और मूल्य प्रदान करती है, जो सतत विकास के लिए आवश्यक हैं।

शिक्षा की भूमिका:

1. **पर्यावरणीय जागरूकता बढ़ाना:** शिक्षा लोगों को पर्यावरण संरक्षण, जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक संसाधनों के सही उपयोग के बारे में जागरूक करती है। पर्यावरणीय शिक्षा के माध्यम से, लोग एक स्थायी जीवन शैली के लिए आवश्यक व्यवहार और आदतें विकसित कर सकते हैं।

2. **गरीबी उन्मूलन:** शिक्षा लोगों के आर्थिक अवसरों को बढ़ाने में मदद करती है, जो गरीबी को कम करने में सहायक है। शिक्षित व्यक्तियों को रोजगार के अवसर मिलते हैं और वे अपने और समाज के जीवन स्तर को बेहतर बनाने में योगदान करने में सक्षम होते हैं।

3. **समाज का सशक्तिकरण:** शिक्षा समाज के हर स्तर पर महिला सशक्तिकरण और सामाजिक समानता सुनिश्चित करने में मदद करती है। शिक्षित पुरुष और महिलाएं समाज के विकास में सक्रिय भूमिका निभा सकते हैं, जो सतत विकास के लिए अनिवार्य है।

4. **स्वास्थ्य और कल्याण:** शिक्षा स्वास्थ्य और कल्याण के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह स्वस्थ जीवन शैली, उचित पोषण और रोग निवारण के विषयों के बारे में ज्ञान प्रदान करती है। एक स्वस्थ और शिक्षित आबादी समाज के सतत विकास में बड़ा योगदान दे सकती है।

5. **सांस्कृतिक और सामाजिक मूल्यों का विकास:** शिक्षा मानवाधिकार, सामाजिक न्याय और सांस्कृतिक विविधता के मूल्यों को उजागर करती है। यह समाज में सहिष्णुता, आपसी सम्मान और सहयोग का माहौल बनाने में मदद करती है, जो सतत विकास की नींव के रूप में कार्य करता है।

6. **विज्ञान और प्रौद्योगिकी का अनुप्रयोग:** शिक्षा विज्ञान और प्रौद्योगिकी के सही अनुप्रयोग के माध्यम से पर्यावरण-अनुकूल और सतत विकास सुनिश्चित करती है। शिक्षा के माध्यम से, लोग नई तकनीकों और नवाचारों के बारे में जागरूक होते हैं, जो पर्यावरण को नुकसान पहुंचाए बिना विकास को गति दे सकते हैं।

निष्कर्ष: सतत विकास के विकास में शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह न केवल लोगों को ज्ञान प्राप्त करने में मदद करती है, बल्कि उन्हें जिम्मेदार नागरिकों के रूप में भी ढालती है, जो समाज और पर्यावरण के प्रति जागरूक हैं। शिक्षा एक शक्तिशाली उपकरण है, जो समाज के समग्र विकास को सुनिश्चित करता है और भविष्य की पीढ़ियों के लिए एक स्वस्थ, समृद्ध और स्थिर दुनिया बनाने में मदद करता है।

2. Explain the relationship among population, environment and quality of life. জনসংখ্যা, পরিবেশ এবং জীবনের গুণগত মানের পারস্পরিক সম্পর্ক ব্যাখ্যা করুন। जनसंख्या, पर्यावरण और जीवन की गुणवत्ता के बीच संबंध समझाइए। **2018, 2021**

Ans: <u>परिचय:</u> विद्यार्थियों में पर्यावरणीय मूल्यों को विकसित करना उनमें जागरूकता, जिम्मेदारी की भावना और प्रकृति के प्रति प्रेम पैदा करने में मदद करता है। यह भावी पीढ़ियों के लिए सतत विकास और पर्यावरण की सुरक्षा हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण है। यहाँ विद्यार्थियों में पर्यावरणीय मूल्यों को बढ़ावा देने के पाँच प्रभावी तरीकों पर चर्चा की गई है।

1. **प्रकृति अवलोकन और अनुभव:** विद्यार्थियों को प्रकृति के साथ सीधा संपर्क करने दें। इसके लिए, वे पार्कों और जंगलों में लंबी पैदल यात्रा पर जा सकते हैं या नदियों और समुद्र तटों की सैर कर सकते हैं। प्रकृति के विभिन्न पहलुओं और सुंदरता का अनुभव करने से उनके भीतर पर्यावरण के प्रति प्रेम और सम्मान पैदा होता है।

2. **शैक्षिक कार्यशालाएं और सेमिनार:** पर्यावरण संरक्षण, जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा जैसे विषयों पर कार्यशालाएं और सेमिनार आयोजित करें। विशेषज्ञों द्वारा विद्यार्थियों को विभिन्न पर्यावरणीय जानकारी और जागरूकता प्रदान की जा सकती है। इससे उन्हें पर्यावरणीय समस्याओं के बारे में जानने और उनके समाधान के बारे में जागरूक होने में मदद मिलती है।

3. **परियोजनाएं और अनुसंधान:** विद्यार्थियों को विभिन्न पर्यावरण संरक्षण परियोजनाओं में शामिल करें, जैसे कि वृक्षारोपण, अपशिष्ट प्रबंधन और पुनः प्रयोज्य उत्पादों का उपयोग। अनुसंधान गतिविधियों के माध्यम से, वे पर्यावरण के विभिन्न पहलुओं के बारे में गहराई से सोचना सीखेंगे और समस्याओं को हल करने के लिए अपने विचार विकसित करने हेतु प्रोत्साहित होंगे।

4. **स्वैच्छिक गतिविधियां:** विद्यार्थियों को विभिन्न पर्यावरण संरक्षण स्वैच्छिक गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करें, जैसे कि स्वच्छता अभियान और प्लास्टिक प्रदूषण उन्मूलन अभियान। इन गतिविधियों में भाग लेने से, वे अपने समाज के लिए काम करने का अनुभव प्राप्त करेंगे और पर्यावरण की सुरक्षा में योगदान दे पाएंगे।

5. **मीडिया के माध्यम से प्रचार:** विद्यार्थियों को पर्यावरण संरक्षण के बारे में जागरूक करने के लिए विभिन्न मीडिया, जैसे सोशल मीडिया, वीडियो और ब्लॉग का उपयोग करें। विद्यार्थी अपने विचारों

और धारणाओं को व्यक्त करके दूसरों में भी जागरूकता बढ़ा सकते हैं, जिससे पर्यावरण के प्रति उनकी जिम्मेदारी की भावना बढ़ेगी।

निष्कर्ष: विद्यार्थियों में पर्यावरणीय मूल्यों को विकसित करना एक दीर्घकालिक प्रक्रिया है जो उनके विचारों और व्यवहार को प्रभावित करती है। ऊपर बताए गए पाँच तरीकों से, हम विद्यार्थियों में जागरूकता, जिम्मेदारी की भावना और प्राकृतिक संसाधनों के प्रति प्रेम पैदा कर सकते हैं। ये पहलें सामूहिक रूप से हमारी भावी पीढ़ियों को एक स्वस्थ और टिकाऊ पर्यावरण बनाने में मदद करेंगी।

3. State any five principles of Population Policy-2000. জনসংখ্যা নীতি 2000 এর যে কোনো পাঁচটি নীতি বিবৃত করুন। जनसंख्या नीति 2000 के पाँच सिद्धांत लिखिए। **2018, 2020, 2022**

Ans: भूमिका: भारत की राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000 देश की जनसंख्या को नियंत्रित करने और लोगों के स्वास्थ्य और कल्याण में सुधार के लिए अपनाई गई एक महत्वपूर्ण नीति है। इसका मुख्य उद्देश्य जनसंख्या वृद्धि दर को नियंत्रित करना, मातृ और शिशु मृत्यु दर को कम करना और स्वास्थ्य सेवा प्रणाली में सुधार करना है। यह नीति देश के सतत विकास को सुनिश्चित करने के लिए अपनाई गई थी।

जनसंख्या नीति 2000 के पाँच मूल सिद्धांत:

1. **जनसंख्या स्थिरीकरण प्राप्त करना:** इस नीति का मुख्य लक्ष्य 2045 तक देश की जनसंख्या को एक स्थिर स्तर पर लाना था। इसके माध्यम से देश में सामाजिक और आर्थिक स्थिरता सुनिश्चित करने की योजना थी।

2. **प्रजनन स्वास्थ्य और परिवार नियोजन:** राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000 ने परिवार नियोजन सेवाओं तक सार्वभौमिक पहुंच सुनिश्चित करने पर जोर दिया। इसमें सुरक्षित गर्भावस्था और प्रसव के लिए सभी आवश्यक सेवाएं प्रदान करना और प्रजनन स्वास्थ्य संबंधी जानकारी और शिक्षा देना शामिल था।

3. **मातृ और शिशु मृत्यु दर को कम करना:** नीति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा मातृ और शिशु मृत्यु दर को कम करना था। यह हर बच्चे के सुरक्षित जन्म को सुनिश्चित करने और मातृ स्वास्थ्य देखभाल में सुधार करके किया गया था।

4. **महिलाओं की शिक्षा और सशक्तिकरण:** जनसंख्या नीति 2000 ने महिलाओं की शिक्षा और सशक्तिकरण को एक महत्वपूर्ण मुद्दा माना। इसका उद्देश्य महिलाओं की शिक्षा को बढ़ाना और उन्हें स्वास्थ्य देखभाल और परिवार नियोजन से संबंधित निर्णय लेने के लिए सशक्त बनाना था।

5. **सतत विकास और पर्यावरण संरक्षण:** नीति का एक और लक्ष्य सतत विकास सुनिश्चित करना था, जो जनसंख्या के दबाव से पर्यावरण की रक्षा करता है। प्राकृतिक संसाधनों के उचित उपयोग और पर्यावरण संरक्षण के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए विभिन्न कदम उठाए गए।

निष्कर्ष: विद्यार्थियों में पर्यावरणीय मूल्यों को विकसित करना एक दीर्घकालिक प्रक्रिया है जो उनके विचारों और व्यवहार को प्रभावित करती है। ऊपर बताए गए पाँच तरीकों से, हम विद्यार्थियों में जागरूकता, जिम्मेदारी की भावना और प्राकृतिक संसाधनों के प्रति प्रेम पैदा कर सकते हैं। ये पहलें सामूहिक रूप से हमारी भावी पीढ़ियों को एक स्वस्थ और टिकाऊ पर्यावरण बनाने में मदद करेंगी।

4. Write the relationship between environmental attitude and environmental values.
পরিবেশ সম্পর্কিত মনোভাব এবং পরিবেশ সম্পর্কিত মূল্যবোধের মধ্যে সম্পর্ক স্থাপন করুন।
पर्यावरण संबंधी दृष्टिकोण और पर्यावरणीय मूल्यों के बीच संबंध लिखिए। **2018**

Ans: भूमिका: पर्यावरणीय दृष्टिकोण और पर्यावरणीय मूल्य दो ऐसे विचार हैं जो एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। ये दोनों विचार किसी व्यक्ति के पर्यावरण के प्रति व्यवहार, दृष्टिकोण और निर्णय लेने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हमारे पर्यावरणीय मूल्य हमारे दृष्टिकोण को प्रभावित करते हैं, और यही दृष्टिकोण पर्यावरण के प्रति हमारे व्यवहार को निर्देशित करता है।

पर्यावरणीय दृष्टिकोण और मूल्यों के बीच संबंध:

1. **मूल्य दृष्टिकोण को प्रभावित करते हैं:** पर्यावरणीय मूल्य किसी व्यक्ति के दृष्टिकोण को आकार देते हैं। उदाहरण के लिए, यदि किसी व्यक्ति में प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा करने का मूल्य है, तो उसका दृष्टिकोण भी पर्यावरण-संरक्षणवादी होगा। यह मूल्य लोगों को पर्यावरण के प्रति एक जागरूक और जिम्मेदार दृष्टिकोण प्रदर्शित करने के लिए प्रेरित करता है।

2. **दृष्टिकोण के माध्यम से मूल्य व्यक्त होते हैं:** पर्यावरणीय दृष्टिकोण किसी व्यक्ति के मूल्यों को व्यक्त करते हैं। जब कोई व्यक्ति पर्यावरण-अनुकूल उत्पादों का उपयोग करता है या कचरा कम करने का प्रयास करता है, तो यह उसके पर्यावरणीय मूल्यों का प्रतिबिंब होता है। दृष्टिकोण की यह अभिव्यक्ति मूल्यों को मजबूत करती है और उसकी जीवनशैली में पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी की भावना सुनिश्चित करती है।

3. **दीर्घकालिक प्रभाव:** पर्यावरणीय मूल्यों का दृष्टिकोण पर दीर्घकालिक प्रभाव पड़ता है। यदि कोई व्यक्ति बचपन से ही पर्यावरण के महत्व के बारे में सीखता है, तो यह उसके दृष्टिकोण और व्यवहार में परिलक्षित होता है। मूल्यों का यह प्रभाव एक स्थायी दृष्टिकोण बनाता है, जो बाद में पर्यावरणीय निर्णय लेने में सहायक होता है।

4. **सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव:** सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्य भी किसी व्यक्ति के पर्यावरणीय दृष्टिकोण को प्रभावित करते हैं। यदि किसी समाज में पर्यावरण संरक्षण का मूल्य मजबूत है, तो उस समाज के सदस्यों का दृष्टिकोण भी पर्यावरण के प्रति सकारात्मक होगा। मूल्यों और दृष्टिकोण की यह परस्पर क्रिया एक टिकाऊ और पर्यावरण-अनुकूल समाज बनाने में मदद करती है।

5. **व्यवहारगत प्रभाव:** पर्यावरणीय मूल्य दृष्टिकोण को प्रभावित करते हैं और उसी के अनुसार व्यवहार में बदलाव लाने में मदद करते हैं। यदि कोई व्यक्ति अपने मूल्यों के अनुसार पर्यावरण संरक्षण को प्राथमिकता देता है, तो उसका दृष्टिकोण भी पर्यावरण-अनुकूल कार्यों की ओर झुकेगा। यह व्यवहार पर्यावरण की सुरक्षा और एक जिम्मेदार नागरिकता के निर्माण में भूमिका निभाता है।

www.dascoaching.in

निष्कर्ष: पर्यावरणीय दृष्टिकोण और मूल्यों के बीच एक गहरा संबंध है। मूल्य हमारे दृष्टिकोण को आकार देते हैं, और यही दृष्टिकोण पर्यावरण के प्रति हमारे व्यवहार और निर्णय लेने को प्रभावित करता है। इसलिए, पर्यावरण के प्रति एक जिम्मेदार और सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने के लिए मूल्यों का विकास अत्यंत महत्वपूर्ण है। ये दोनों अवधारणाएं मिलकर एक स्वस्थ, टिकाऊ और पर्यावरण-अनुकूल समाज बनाने में मदद करती हैं।

5. What do you mean by Population Education? Write the characteristics of Population Education. জনসংখ্যা শিক্ষা বলতে কি বোঝেন? জনসংখ্যা শিক্ষার বৈশিষ্ট্যগুলি লিখুন। जनसंख्या शिक्षा से आप क्या समझते हैं? इसकी विशेषताएँ लिखिए। **2018, 2020, 2022**

Ans: भूमिका: जनसंख्या शिक्षा एक शैक्षिक प्रक्रिया है जो लोगों को जनसंख्या वृद्धि, इसके प्रभावों और जनसंख्या-संबंधी विभिन्न समस्याओं के समाधान के बारे में जागरूक करती है। यह समाज के हर स्तर पर लोगों को उनके स्वयं के और समग्र विकास के लिए सही निर्णय लेने में सहायक भूमिका निभाती है। जनसंख्या शिक्षा के माध्यम से लोगों को परिवार नियोजन, स्वास्थ्य और आर्थिक स्थिरता जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर शिक्षित किया जाता है।

जनसंख्या शिक्षा से क्या समझते हैं? जनसंख्या शिक्षा एक शैक्षिक गतिविधि है जो लोगों को जनसंख्या वृद्धि, इसके प्रभावों और विभिन्न सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान के बारे में जागरूक करती है। यह समाज के प्रत्येक व्यक्ति को जनसंख्या-संबंधी विभिन्न विषयों के बारे में ज्ञान प्रदान करती है, ताकि वे सही निर्णय ले सकें और एक स्वस्थ और विकसित समाज का निर्माण कर सकें।

जनसंख्या शिक्षा की विशेषताएँ

1. समग्र दृष्टिकोण: जनसंख्या शिक्षा केवल जनसंख्या वृद्धि के बारे में ही नहीं, बल्कि स्वास्थ्य, अर्थव्यवस्था, सामाजिक विकास और पर्यावरण पर इसके संबंधित प्रभावों के बारे में भी जागरूकता बढ़ाती है। यह एक समग्र दृष्टिकोण प्रदान करती है, जो लोगों को जनसंख्या के विभिन्न पहलुओं से अवगत कराता है।

2. उद्देश्य-आधारित शिक्षा: जनसंख्या शिक्षा विशिष्ट लक्ष्यों और उद्देश्यों को ध्यान में रखकर संरचित की जाती है, जैसे जन्म दर नियंत्रण, परिवार नियोजन और गरीबी उन्मूलन। यह समाज की स्थिरता और विकास सुनिश्चित करने के लिए एक विशिष्ट उद्देश्य के साथ काम करती है।

3. व्यावहारिक शिक्षा: जनसंख्या शिक्षा वास्तविक जीवन में लागू होती है, जो लोगों के दैनिक जीवन को प्रभावित करती है। इसके माध्यम से, लोग परिवार नियोजन, स्वच्छता और आर्थिक स्थिरता जैसे महत्वपूर्ण मामलों के बारे में ज्ञान प्राप्त करते हैं, जो उनके जीवन की गुणवत्ता को बेहतर बनाने में मदद करता है।

4. मानवाधिकार और न्याय पर जोर: जनसंख्या शिक्षा मानवाधिकारों, विशेष रूप से महिलाओं के अधिकारों और न्याय पर जोर देती है। यह सभी लोगों के लिए समान अधिकार सुनिश्चित करने में मदद करती है और समाज में महिलाओं के सशक्तिकरण और समानता स्थापित करने में सहायक भूमिका निभाती है।

5. सतत विकास: जनसंख्या शिक्षा सतत विकास पर ध्यान केंद्रित करती है, जो भविष्य की पीढ़ियों के लिए एक स्वस्थ, स्थिर और पर्यावरण-अनुकूल समाज बनाने में मदद करता है। यह प्राकृतिक संसाधनों के उचित उपयोग और पर्यावरण संरक्षण पर जोर देती है।

निष्कर्ष: जनसंख्या शिक्षा समाज के विकास के लिए एक अत्यंत महत्वपूर्ण घटक है, जो लोगों के जीवन की गुणवत्ता को बेहतर बनाने और एक स्वस्थ और स्थिर समाज का निर्माण करने में मदद करती है। इसकी विशेषताएँ लोगों को न केवल ज्ञान प्राप्त करने के लिए बल्कि इसे अपने जीवन में लागू करने के लिए भी प्रोत्साहित करती हैं। इसलिए, जनसंख्या शिक्षा के महत्व को समझते हुए, इसे समाज के हर स्तर पर फैलाया जाना चाहिए ताकि हम एक समृद्ध और टिकाऊ भविष्य का निर्माण कर सकें।

6. Explain the concepts of 'Ecofeminism' and 'Empowerment of Women'. পরিবেশ নারীবাদ ও নারীর ক্ষমতায়নের ধারণাটি ব্যাখ্যা করুন। इको-नारीवाद और महिला सशक्तिकरण की अवधारणा समझाइए। **2019, 2021**

Ans: भूमिका: 'इकोफेमिनिज्म' और 'महिलाओं का सशक्तिकरण' दो महत्वपूर्ण सामाजिक और दार्शनिक अवधारणाएँ हैं, जो समाज में महिलाओं की स्थिति, उनकी शक्ति, और प्राकृतिक पर्यावरण के

साथ उनके संबंधों पर चर्चा करती हैं। ये दोनों अवधारणाएँ समाज में समानता, न्याय, और पर्यावरण संरक्षण के मुद्दों को एक साथ लाती हैं, जो सतत विकास के लिए अनिवार्य हैं।

इकोफेमिनिज्म: इकोफेमिनिज्म एक समाजशास्त्रीय और पर्यावरणवादी आंदोलन है, जो नारीवाद और पर्यावरणवाद को जोड़ता है। इकोफेमिनिस्ट्स का मानना है कि महिलाओं और प्रकृति पर होने वाला शोषण और उत्पीड़न एक ही पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचना का परिणाम है।

1. **महिला और प्रकृति का संबंध:** इकोफेमिनिज्म की अवधारणा बताती है कि पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचनाएँ महिलाओं और प्रकृति दोनों का शोषण करती हैं और उनके अधिकारों को छीनती हैं। महिलाओं का प्राकृतिक संसाधनों और पर्यावरण के साथ घनिष्ठ संबंध है, जिसे इकोफेमिनिज्म में विशेष महत्व दिया गया है।

2. **शोषण और उत्पीड़न के खिलाफ लड़ाई:** इकोफेमिनिज्म महिलाओं और पर्यावरण पर पितृसत्तात्मक शोषण और उत्पीड़न के खिलाफ लड़ता है। यह महिलाओं के सशक्तिकरण के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण के मुद्दे को भी उजागर करता है।

3. **सतत विकास:** इकोफेमिनिज्म सतत विकास के लिए महिलाओं और प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा में समानता और न्याय स्थापित करने की आवश्यकता पर जोर देता है। यह मानवता और प्रकृति के बीच एक स्वस्थ संबंध स्थापित करने के लिए काम करता है।

महिलाओं का सशक्तिकरण: महिलाओं का सशक्तिकरण का अर्थ है सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, और सांस्कृतिक क्षेत्रों में महिलाओं को मजबूत बनाना, ताकि वे समाज में समान अवसर और अधिकारों का आनंद ले सकें।

दोनों ही एक समतावादी औआर्थिक स्वतंत्रता: महिलाओं के सशक्तिकरण का पहला कदम आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त करना है। महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने के लिए उन्हें काम के अवसर और संपत्ति का अधिकार मिलना चाहिए। इससे वे अपने और अपने परिवार के जीवन स्तर को बेहतर बनाने में सक्षम होंगी।

1. **शिक्षा और ज्ञानः** महिलाओं के सशक्तिकरण का एक सबसे महत्वपूर्ण घटक शिक्षा है। शिक्षित महिलाएँ समाज में अपनी भूमिका को और मजबूत कर सकती हैं और समाज के विकास में एक बड़ी भूमिका निभा सकती हैं।

2. **स्वास्थ्य और सुरक्षाः** महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए स्वास्थ्य और सुरक्षा का मुद्दा भी महत्वपूर्ण है। महिलाओं को स्वास्थ्य सेवाएँ, प्रजनन स्वास्थ्य, और हिंसा से सुरक्षा सुनिश्चित करनी चाहिए, ताकि वे समाज में स्वतंत्र और सुरक्षित रूप से रह सकें।

3. **राजनीतिक और सामाजिक भागीदारीः** महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए उनकी राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्रों में सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करनी चाहिए। इससे उन्हें समाज में समान अधिकार और अवसर मिलेंगे और वे नीति निर्धारण में भूमिका निभा सकेंगी।

4. **अपनी पहचान और गरिमाः** महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए उन्हें अपनी पहचान और गरिमा का अधिकार होना चाहिए। जब महिलाएँ समाज में अपनी खुद की पहचान और गरिमा के साथ रह सकेंगी, तो उनकी शक्ति बढ़ेगी और समाज में समानता स्थापित होगी।

निष्कर्षः इकोफेमिनिज्म और महिलाओं का सशक्तिकरण र सतत समाज के निर्माण के लिए अनिवार्य हैं। इकोफेमिनिज्म महिलाओं और प्रकृति के बीच संबंधों पर काम करता है, जबकि महिलाओं का सशक्तिकरण महिलाओं के समग्र विकास और अधिकारों पर ध्यान केंद्रित करता है। ये दोनों अवधारणाएँ मिलकर समाज में समानता, न्याय, और सतत विकास को प्राप्त करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

7. Discuss the necessity of sustainable development. স্থিতিশীল উন্নয়নের প্রয়োজনীয়তা আলোচনা করুন। सतत विकास की आवश्यकता पर चर्चा कीजिए। **2019**

Ans: भूमिकाः सतत विकास (Sustainable Development) एक ऐसी विकास प्रक्रिया है जो वर्तमान पीढ़ी की जरूरतों को पूरा करने के साथ-साथ भविष्य की पीढ़ियों की जरूरतों को पूरा करने की क्षमता को भी बनाए रखती है। वर्तमान समय में, वैश्विक पर्यावरणीय, आर्थिक और सामाजिक चुनौतियों का सामना करने के लिए सतत विकास अनिवार्य है। यह समाज को दीर्घकालिक समाधानों की राह पर आगे

बढ़ाता है, जहाँ पर्यावरण, अर्थव्यवस्था और सामाजिक कल्याण के बीच एक संतुलित सामंजस्य बनाए रखा जाता है।

सतत विकास की आवश्यकता:

1. **पर्यावरण संरक्षण:** वर्तमान विकास गतिविधियों के परिणामस्वरूप प्राकृतिक संसाधनों का दुरुपयोग और पर्यावरण प्रदूषण का स्तर बढ़ रहा है। सतत विकास यह सुनिश्चित करता है कि हम प्राकृतिक संसाधनों का इस तरह से उपयोग करें जिससे पर्यावरण पर हानिकारक प्रभाव कम हो और उन्हें भविष्य की पीढ़ियों के लिए संरक्षित किया जा सके।

2. **गरीबी उन्मूलन:** शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार जैसी कई सामाजिक और आर्थिक समस्याएं सीधे तौर पर गरीबी से जुड़ी हैं। सतत विकास गरीबी उन्मूलन में सहायक है, क्योंकि यह संतुलित आर्थिक विकास के माध्यम से सभी के लिए बेहतर जीवन स्तर के अवसर पैदा करता है।

3. **आर्थिक स्थिरता:** टिकाऊ आर्थिक नीतियां और योजनाएं सतत विकास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। यह अर्थव्यवस्था के दीर्घकालिक विकास को सुनिश्चित करता है और प्राकृतिक संसाधनों के संतुलित उपयोग के माध्यम से आर्थिक स्थिरता की रक्षा करता है।

4. **सामाजिक समानता:** सतत विकास समाज के हर व्यक्ति के लिए समान अवसर और सुविधाएं सुनिश्चित करता है। यह सामाजिक असमानताओं को कम करता है और समाज के सभी स्तरों के लोगों के विकास को सुनिश्चित करता है, जो सामाजिक स्थिरता और शांति बनाए रखने में सहायक है।

5. **जलवायु परिवर्तन के प्रभावों का मुकाबला:** जलवायु परिवर्तन आज दुनिया के सामने सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है। सतत विकास ऐसे कदम उठाता है जो जलवायु परिवर्तन के नकारात्मक प्रभावों को कम करने और हमारी जैव विविधता की रक्षा करने में सहायक होते हैं।

निष्कर्ष: सतत विकास न केवल वर्तमान के लिए, बल्कि भविष्य की पीढ़ियों के विकास के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह पर्यावरण, अर्थव्यवस्था और समाज के बीच एक संतुलित सामंजस्य बनाए रखता है, जो

एक दीर्घकालिक और स्वस्थ समाज के निर्माण में सहायक होता है। इसलिए, सतत विकास हम सभी के लिए एक अनिवार्य लक्ष्य होना चाहिए, ताकि हम एक टिकाऊ और समृद्ध भविष्य का निर्माण कर सकें।

8. Explain the relationship between population education policies and population dynamics in India. ভারতে জনশিক্ষানীতি ও জনসংখ্যা গতিবিদ্যার মধ্যকার সম্পর্কটি ব্যাখ্যা করুন। भारत में जनसंख्या शिक्षा नीतियों और जनसांख्यिकी के बीच संबंध समझाइए। **2019, 2021**

Ans: <u>भूमिका:</u> भारत जैसे एक populous (जन-बहुलता) देश में, जनसंख्या शिक्षा और सार्वजनिक शिक्षा नीतियाँ जनसंख्या की गतिशीलता को नियंत्रित और प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। जनसंख्या गतिशीलता (Population dynamics) एक देश की जनसंख्या के आकार, संरचना और वृद्धि से संबंधित सभी परिवर्तनों को दर्शाती है। सार्वजनिक शिक्षा नीतियाँ इन परिवर्तनों को सही ढंग से प्रबंधित करने में सहायक हो सकती हैं, जो किसी देश के आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है।

<u>सार्वजनिक शिक्षा नीति और जनसंख्या गतिशीलता के बीच संबंध:</u>

1. **परिवार नियोजन और जन्म नियंत्रण:** भारत की सार्वजनिक शिक्षा नीतियाँ परिवार नियोजन और जन्म नियंत्रण के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए विभिन्न प्रचार और शिक्षा कार्यक्रम चलाती हैं। ये नीतियाँ परिवारों को छोटा रखने और जन्म दर को नियंत्रित करने में मदद करती हैं, जिससे जनसंख्या वृद्धि की दर प्रभावित होती है।

2. **महिला शिक्षा पर जोर:** महिला शिक्षा को बढ़ावा देना भारत की सार्वजनिक शिक्षा नीति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। शिक्षित महिलाएँ आमतौर पर परिवार नियोजन के बारे में अधिक जागरूक होती हैं और देर से शादी करने या कम बच्चे पैदा करने में रुचि रखती हैं, जो जनसंख्या की गतिशीलता को प्रभावित करता है।

3. **स्वास्थ्य सेवा और प्रजनन स्वास्थ्य:** सार्वजनिक शिक्षा नीति में स्वास्थ्य सेवा के विकास और प्रजनन स्वास्थ्य से संबंधित शिक्षा पर विशेष जोर दिया जाता है। इससे मातृ मृत्यु दर और शिशु मृत्यु दर में कमी आती है, जो जनसंख्या वृद्धि की दर को प्रभावित करता है।

4. **आर्थिक विकास और रोजगार:** आर्थिक विकास और रोजगार सृजन का प्रयास सार्वजनिक शिक्षा नीति का एक महत्वपूर्ण पहलू है। आर्थिक स्थिरता और रोजगार सुनिश्चित करके, जनसंख्या की वृद्धि और स्थानांतरित जनसंख्या की गतिशीलता को नियंत्रित करना संभव होता है।

5. **ग्रामीण विकास और शहरीकरण:** भारत की सार्वजनिक शिक्षा नीति में ग्रामीण विकास पर जोर दिया गया है, जो शहरीकरण और जनसंख्या के स्थानांतरण की गतिशीलता को प्रभावित करता है। ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा में सुधार स्थानांतरण की दर को कम करने में मदद करता है।

निष्कर्ष: भारत में सार्वजनिक शिक्षा नीति और जनसंख्या की गतिशीलता के बीच घनिष्ठ संबंध है। सार्वजनिक शिक्षा नीति जनसंख्या की संरचना और वृद्धि दर को प्रभावित करती है, जो देश के समग्र विकास के लिए आवश्यक है। इसलिए, इन नीतियों का उचित कार्यान्वयन और विकास भारत के टिकाऊ भविष्य को आकार देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

9. Discuss five objectives of Environmental Education. পরিবেশ বিদ্যার পাঁচটি উদ্দেশ্য আলোচনা করুন। पर्यावरण शिक्षा के पाँच उद्देश्य लिखिए। **2019, 2020, 2021**

Ans: भूमिका: पर्यावरण शिक्षा (Environmental Education) मानव और पर्यावरण के बीच के संबंधों को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण शैक्षिक क्षेत्र है। यह लोगों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता और जिम्मेदारी की भावना विकसित करने के लिए आवश्यक है। पर्यावरण शिक्षा के माध्यम से, छात्र पर्यावरणीय समस्याओं को समझ सकते हैं और उन्हें हल करने के लिए आवश्यक कौशल प्राप्त कर सकते हैं। यहाँ पर्यावरण शिक्षा के पाँच उद्देश्यों पर चर्चा की गई है।

पर्यावरण शिक्षा के पाँच उद्देश्य:

1. **जागरूकता बढ़ाना:** पर्यावरण शिक्षा का पहला उद्देश्य छात्रों में पर्यावरण से संबंधित मुद्दों के प्रति जागरूकता बढ़ाना है। यह उन्हें वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, वनों की कटाई, और जलवायु परिवर्तन जैसी विभिन्न पर्यावरणीय समस्याओं के बारे में जानकारी देता है। जागरूकता बढ़ने से वे इन समस्याओं को हल करने में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रोत्साहित होते हैं।

2. **जिम्मेदारी की भावना विकसित करना:** पर्यावरण शिक्षा छात्रों में पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी की भावना विकसित करने में मदद करती है। वे समझते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति का पर्यावरण की रक्षा करने का कर्तव्य है और उनके कार्यों का पर्यावरण पर क्या प्रभाव पड़ता है। यह उनमें पर्यावरण की रक्षा के लिए सक्रिय रूप से काम करने की इच्छा जगाता है।

3. **रचनात्मक समस्या-समाधान:** पर्यावरण शिक्षा छात्रों की रचनात्मक सोच और समस्या-समाधान कौशल को बढ़ाती है। वे पर्यावरणीय समस्याओं की पहचान, विश्लेषण और उन्हें हल करने के लिए विभिन्न विचारों और परियोजनाओं को बनाना सीखते हैं। यह उन्हें वास्तविक जीवन की समस्याओं को हल करने में मदद करता है।

4. **सामाजिक कौशल में सुधार:** पर्यावरण शिक्षा छात्रों के सामाजिक कौशल के विकास में सहायक है। समूह कार्य, चर्चा, और परियोजनाओं में भाग लेने के माध्यम से वे सहयोग, बातचीत और समझौता करने की अपनी क्षमताओं को बढ़ाते हैं। यह उन्हें टीम के साथ काम करने और समाज में सही भूमिका निभाने का कौशल प्रदान करता है।

5. **सतत विकास की अवधारणा को बढ़ावा देना:** पर्यावरण शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य सतत विकास की अवधारणा को बढ़ावा देना है। यह छात्रों को सिखाता है कि वर्तमान पीढ़ी की जरूरतों को पूरा करते हुए भविष्य की पीढ़ियों के लिए पर्यावरण और संसाधनों का संरक्षण कैसे किया जाए। सतत विकास की अवधारणा छात्रों को एक सही और स्थिर समाज बनाने में मदद करती है।

निष्कर्ष: पर्यावरण शिक्षा केवल पर्यावरण से संबंधित जानकारी प्रदान नहीं करती, बल्कि यह छात्रों में जागरूकता, जिम्मेदारी की भावना और रचनात्मक सोच भी विकसित करती है। यह उन्हें पर्यावरणीय समस्याओं को समझने और उन्हें हल करने में प्रभावी भूमिका निभाने में सक्षम बनाता है। इसलिए, पर्यावरण शिक्षा के उद्देश्य समाज के सतत विकास और पर्यावरण संरक्षण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

www.dascoaching.in

10. Discuss the role of education in promoting positive environmental attitude and values. পরিবেশবান্ধব মনোভাব ও মূল্যবোধ গঠনে শিক্ষার ভূমিকা আলোচনা করুন। सकारात्मक पर्यावरणीय दृष्टिकोण और मूल्यों को बढ़ावा देने में शिक्षा की भूमिका लिखिए। **2019, 2020, 2021**

Ans: <u>भूमिका:</u> शिक्षा एक शक्तिशाली उपकरण है जो पर्यावरण-अनुकूल मानसिकता और मूल्यों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सही शिक्षा पर्यावरणीय जागरूकता पैदा करती है और लोगों को उनकी जिम्मेदारी का एहसास कराती है। यह भावी पीढ़ियों को पर्यावरण की रक्षा करने के लिए प्रेरित करती है और सतत विकास का मार्ग प्रशस्त करती है।

<u>शिक्षा की भूमिका:</u>

1. **ज्ञान और जानकारी प्रदान करना:** शिक्षा छात्रों को पर्यावरण के विभिन्न पहलुओं, जैसे जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, और प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग के महत्व के बारे में जागरूक करती है। सही जानकारी के माध्यम से, वे विभिन्न पर्यावरणीय समस्याओं और चुनौतियों से अवगत होते हैं और उनके समाधान जानने का अवसर पाते हैं।

2. **आलोचनात्मक सोच और विश्लेषण क्षमता का विकास:** शिक्षा छात्रों की आलोचनात्मक सोच और विश्लेषण क्षमताओं को बेहतर बनाने में मदद करती है। वे विभिन्न पर्यावरणीय मुद्दों पर विचार कर सकते हैं और उनके समाधान के लिए विभिन्न विचार उत्पन्न कर सकते हैं, जो पर्यावरण के प्रति उनके दृष्टिकोण को आकार देता है।

3. **अनुभव और गतिविधियाँ:** शैक्षिक गतिविधियों जैसे कि प्रकृति भ्रमण, वृक्षारोपण, और स्वयंसेवी कार्यों में भाग लेने के माध्यम से, छात्र पर्यावरण के प्रति अपने संबंध और जिम्मेदारी को महसूस करते हैं। इस तरह के अनुभव उन्हें पर्यावरण की रक्षा के लिए प्रोत्साहित करते हैं और वास्तविक जीवन में पर्यावरण-अनुकूल गतिविधियों में शामिल होने के लिए प्रभावित करते हैं।

4. **नैतिक और सामाजिक जिम्मेदारी:** शिक्षा छात्रों में नैतिक और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना विकसित करती है। पर्यावरण संरक्षण के महत्व के बारे में सिखाने से, वे समझते हैं कि पर्यावरण की रक्षा न केवल उनकी जिम्मेदारी है, बल्कि समाज और भविष्य की पीढ़ियों के लिए भी महत्वपूर्ण है।

5. **मीडिया और प्रौद्योगिकी का उपयोग:** शैक्षणिक संस्थान विभिन्न मीडिया और प्रौद्योगिकियों के माध्यम से पर्यावरण-अनुकूल विचारों को बढ़ावा दे सकते हैं। सोशल मीडिया, वीडियो, और डिजिटल शिक्षा प्लेटफार्मों का उपयोग करके, छात्रों के बीच पर्यावरणीय जागरूकता बढ़ाना संभव है, जो उनके विचारों और व्यवहार को प्रभावित करता है।

निष्कर्ष: शिक्षा के माध्यम से पर्यावरण-अनुकूल मानसिकता और मूल्यों को आकार देना एक अभिन्न प्रक्रिया है। सही शिक्षा मानव जीवन के हर पहलू को प्रभावित करती है और पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी की भावना पैदा करने में सहायक होती है। शिक्षा के माध्यम से, हम आने वाली पीढ़ी को पर्यावरण की रक्षा के लिए तैयार कर सकते हैं, जो एक स्थायी और स्वस्थ पृथ्वी के निर्माण में मदद करेगा। इस प्रकार, शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्त करने का साधन नहीं है, बल्कि पर्यावरण के प्रति एक जागरूक और जिम्मेदार दृष्टिकोण बनाने का भी एक तरीका है।

11. Explain the concepts of 'Empowerment of Women'. নারীর ক্ষমতায়নের ধারণাটি ব্যাখ্যা করুন। महिला सशक्तिकरण की अवधारणा समझाइए। **2022**

Ans: परिचय: महिलाओं का सशक्तीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से महिलाएं अपने जीवन को प्रभावित करने वाले निर्णय लेने की शक्ति और स्वतंत्रता प्राप्त करती हैं। यह केवल उन्हें अधिकार या अवसर देने के बारे में नहीं है, बल्कि उनके भीतर आत्मविश्वास, आत्म-सम्मान और अपनी क्षमताओं के बारे में जागरूकता पैदा करना है। सशक्तीकरण का अर्थ है सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और व्यक्तिगत जीवन में महिलाओं और पुरुषों को समान रूप से देखना और महिलाओं को अपनी क्षमताओं औरM संभावनाओं का पूरी तरह से उपयोग करने का अवसर देना। महिलाओं का सशक्तीकरण किसी भी समाज के समग्र विकास के लिए अनिवार्य है, क्योंकि यह लैंगिक असमानता को कम करता है और एक संतुलित समाज के निर्माण में मदद करता है।

महिला सशक्तीकरण की अवधारणा:

1. **सामाजिक सशक्तीकरण:** इसके माध्यम से महिलाएं समाज में पुरुषों के बराबर दर्जा और सम्मान पाती हैं। यह लैंगिक पूर्वाग्रहों और पारंपरिक बाधाओं को दूर करने में मदद करता है, ताकि महिलाओं को समाज में किसी भी तरह के भेदभाव का सामना न करना पड़े।

2. **आर्थिक सशक्तीकरण:** महिलाओं के लिए आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त करना इस अवधारणा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसमें रोजगार, धन, संपत्ति और वित्तीय लेनदेन पर नियंत्रण शामिल है। यह उन्हें आत्मनिर्भर बनाता है।

3. **राजनीतिक सशक्तीकरण:** यह सुनिश्चित करना कि महिलाएं राजनीति और सरकारी निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में सक्रिय रूप से भाग ले सकें। इसके परिणामस्वरूप, वे अपने अधिकारों और समाज की जरूरतों के बारे में निर्णय ले सकती हैं।

4. **शिक्षा के क्षेत्र में सशक्तीकरण:** महिलाओं के लिए समान और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के अवसरों को सुनिश्चित करना। शिक्षा महिलाओं में जागरूकता और ज्ञान बढ़ाती है, जो उनके व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन में सफलता का मार्ग खोलती है।

5. **शारीरिक और मानसिक सशक्तीकरण:** महिलाओं के अपने शरीर पर पूर्ण नियंत्रण और स्वास्थ्य सुरक्षा के अधिकार को सुनिश्चित करना। यह मानसिक स्वास्थ्य को भी महत्व देता है, ताकि वे मानसिक रूप से मजबूत और स्थिर हो सकें।

6. **कानूनी सशक्तीकरण:** महिलाओं को उनके कानूनी अधिकारों के बारे में जागरूक करना और कानून प्रवर्तन एजेंसियों की मदद से उनके अधिकारों की रक्षा करना। यह उन्हें समाज में कानूनी सुरक्षा प्रदान करता है।

7. **निर्णय लेने की शक्ति:** परिवार से लेकर कार्यस्थल तक, हर स्तर पर महिलाओं को अपने निर्णय लेने की शक्ति देना। इससे उनका आत्मविश्वास और आत्म-सम्मान बढ़ता है।

8. **आत्म-जागरूकता और आत्मविश्वास:** महिलाओं को उनकी क्षमताओं, कौशल और संभावनाओं पर विश्वास करना सिखाना। इसके परिणामस्वरूप, वे अपनी कमजोरियों को पार कर सकती हैं।

9. **संसाधनों पर नियंत्रण:** महिलाओं को जमीन, पैसा और अन्य संसाधनों पर कानूनी अधिकार और नियंत्रण प्रदान करना। यह उनकी आर्थिक सुरक्षा सुनिश्चित करता है।

www.dascoaching.in

10. **सामाजिक परिवर्तन:** महिलाओं को उनके समुदाय और समाज में सकारात्मक बदलाव लाने वाले एजेंट के रूप में कार्य करने का अवसर देना। यह उन्हें सामाजिक विकास में नेतृत्व करने की अनुमति देता है।

निष्कर्ष: महिला सशक्तीकरण एक बहुआयामी अवधारणा है जो केवल महिलाओं के व्यक्तिगत विकास तक ही सीमित नहीं है, बल्कि एक समाज की समग्र भलाई के लिए भी अनिवार्य है। यह सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में महिलाओं के लिए समान अवसर और अधिकार सुनिश्चित करता है। एक स्वस्थ और संतुलित समाज के निर्माण के लिए इस प्रक्रिया में पुरुषों और महिलाओं दोनों की समान भागीदारी की आवश्यकता है। महिला सशक्तीकरण न केवल नैतिक रूप से सही है, बल्कि यह किसी भी देश की आर्थिक वृद्धि और सामाजिक स्थिरता के लिए भी महत्वपूर्ण है। जब इस अवधारणा को साकार किया जाएगा, तो महिलाएं अपनी पूरी क्षमता का उपयोग कर पाएंगी और एक बेहतर भविष्य के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकेंगी।

12. Write, in short, the general guidelines of Environmental Education. পরিবেশ বিদ্যার সাধারণ নির্দেশনাগুলি সংক্ষেপে লিখুন। पर्यावरण शिक्षा के सामान्य दिशा-निर्देश संक्षेप में लिखि**ए। 2022**

Ans: भूमिका: पर्यावरण शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से लोग पर्यावरण की जटिलताओं के बारे में जागरूक होते हैं और इसकी समस्याओं को हल करने में प्रभावी भूमिका निभाने के लिए प्रोत्साहित होते हैं। यह केवल जानकारी का भंडार नहीं है, बल्कि यह एक जीवन-उन्मुख शिक्षा है जो हमें अपने और पृथ्वी के बीच के संबंध को समझने में मदद करती है। पर्यावरण अध्ययन का मुख्य लक्ष्य छात्रों में पर्यावरणीय जागरूकता, नैतिकता और जिम्मेदारी की भावना पैदा करना है, ताकि वे एक स्वस्थ और टिकाऊ भविष्य के निर्माण में सक्रिय रूप से भाग ले सकें। यह शिक्षा हमें सिखाती है कि पर्यावरण एक समग्र प्रणाली है और इसके प्रत्येक घटक एक दूसरे से जुड़े हुए हैं।

पर्यावरण अध्ययन के सामान्य दिशानिर्देश:

1. **सार्वभौमिक शिक्षा का सिद्धांत:** पर्यावरण शिक्षा केवल कुछ विशेष लोगों के लिए नहीं, बल्कि सभी के लिए होनी चाहिए। इसे बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक, सभी उम्र के लोगों के लिए सुलभ और

उपयुक्त बनाना आवश्यक है। यह लोगों को जीवन के हर चरण में पर्यावरण के प्रति जागरूक रहने में मदद करती है।

2. **समग्र दृष्टिकोण:** पर्यावरण शिक्षा में पर्यावरणीय, आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और तकनीकी सभी पहलुओं को शामिल किया जाना चाहिए। यह एक अलग विषय नहीं है, बल्कि जीवन के हर क्षेत्र से संबंधित है। यह सिद्धांत समग्र ज्ञान प्राप्त करने में मदद करता है।

3. **आजीवन शिक्षा का सिद्धांत:** पर्यावरण शिक्षा किसी विशेष समय तक सीमित नहीं है, यह एक निरंतर प्रक्रिया है। लोग जितना अधिक अनुभव प्राप्त करते हैं, पर्यावरण के बारे में उनका ज्ञान उतना ही गहरा होता जाता है। इसलिए, इसे शिक्षा के सभी स्तरों और जीवन के हर पड़ाव में शामिल किया जाना चाहिए।

4. **समस्या-समाधान पर ध्यान:** छात्रों में पर्यावरणीय समस्याओं को पहचानने और उन्हें हल करने के लिए महत्वपूर्ण सोच कौशल विकसित करना महत्वपूर्ण है। इसमें केवल समस्याओं के बारे में सीखना ही नहीं, बल्कि उनके समाधान खोजने के लिए भी प्रोत्साहित करना शामिल है।

5. **स्थानीय से अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ:** पर्यावरण शिक्षा की शुरुआत स्थानीय पर्यावरण से होनी चाहिए, जो छात्र के लिए परिचित हो। धीरे-धीरे, इस ज्ञान को क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरणीय मुद्दों से जोड़ा जाना चाहिए, ताकि वैश्विक संदर्भ को समझा जा सके।

6. **सक्रिय भागीदारी का सिद्धांत:** छात्रों को निष्क्रिय श्रोता न रखकर, उन्हें पर्यावरणीय गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, वृक्षारोपण, अपशिष्ट प्रबंधन, या पर्यावरण से संबंधित परियोजनाएं बनाना। यह व्यावहारिक ज्ञान को बढ़ाने में मदद करता है।

7. **मूल्यों और नैतिकता का विकास:** पर्यावरण शिक्षा का एक महत्वपूर्ण पहलू पर्यावरण के प्रति सम्मान और जिम्मेदारी की भावना पैदा करना है। यह शिक्षा लोगों में पर्यावरणीय मूल्यों को विकसित करती है, जिससे वे अपनी जीवनशैली को बदलने के लिए प्रेरित होते हैं।

8. **अंतर-विषयक दृष्टिकोण का अनुप्रयोग:** पर्यावरण शिक्षा को केवल एक विशिष्ट विषय के रूप में नहीं देखना चाहिए, बल्कि इसे अन्य विषयों जैसे विज्ञान, भूगोल, इतिहास और अर्थशास्त्र के साथ जोड़ा जाना चाहिए। इसके माध्यम से छात्र पर्यावरणीय समस्याओं को विभिन्न दृष्टिकोणों से देख सकते हैं।

9. **भविष्य-उन्मुख शिक्षा:** पर्यावरण शिक्षा छात्रों को भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार करती है। यह उन्हें सिखाती है कि वर्तमान के निर्णय भविष्य के पर्यावरण को कैसे प्रभावित करेंगे। यह सिद्धांत उनमें दूरदर्शिता विकसित करता है।

10. **मूल्यांकन का सिद्धांत:** छात्रों के पर्यावरणीय ज्ञान, जागरूकता और व्यवहार में बदलाव का नियमित रूप से मूल्यांकन किया जाना चाहिए। यह शिक्षा की प्रभावशीलता को समझने में मदद करता है और आवश्यक सुधार करने का अवसर प्रदान करता है।

निष्कर्ष: पर्यावरण अध्ययन के ये सामान्य दिशानिर्देश एक प्रभावी और सार्थक शिक्षा प्रणाली बनाने के लिए अनिवार्य हैं। ये सिद्धांत न केवल पर्यावरण के बारे में ज्ञान प्रदान करते हैं, बल्कि छात्रों में जिम्मेदारी और सक्रिय भागीदारी की मानसिकता भी विकसित करते हैं। वे एक टिकाऊ समाज की नींव रखते हैं जहाँ इंसान और प्रकृति एक दूसरे के साथ शांतिपूर्वक सह-अस्तित्व में रह सकते हैं। इन दिशानिर्देशों का पालन करके पर्यावरण शिक्षा को और अधिक मजबूत और प्रभावी बनाया जा सकता है, जिससे वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों के लिए एक स्वस्थ ग्रह सुनिश्चित होगा। यह शिक्षा हमें याद दिलाती है कि पर्यावरण हमारा ही हिस्सा है और इसकी सुरक्षा की जिम्मेदारी हम सभी की है।

13. Explain with an example the methodology of teaching Population Education. জনসংখ্যা শিক্ষার শিক্ষণ পদ্ধতিগুলি একটি উদাহরণের সাহায্যে ব্যাখ্যা করুন। जनसंख्या शिक्षा की शिक्षण पद्धति को एक उदाहरण सहित समझाइए। **2023, 2024**

Ans: भूमिका: जनसंख्या शिक्षा एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है जो मानव जनसंख्या वृद्धि, परिवार नियोजन, स्वास्थ्य और सामाजिक विकास पर पड़ने वाले प्रभावों के बारे में जागरूकता बढ़ाती है। यह छात्रों को उनके जीवन

और समाज के लिए सही निर्णय लेने में मदद करती है। जनसंख्या शिक्षा के प्रभावी शिक्षण विधियों का उपयोग करके छात्रों में इस विषय पर ज्ञान और कौशल बढ़ाना संभव है।

जनसंख्या शिक्षा की शिक्षण विधियाँ:

1. **चर्चा विधि:** शिक्षक के नेतृत्व में, इस विधि में जनसंख्या वृद्धि के प्रभावों, परिवार नियोजन और स्वास्थ्य से संबंधित विषयों पर छात्रों के बीच खुली चर्चा होती है। उदाहरण: शिक्षक विभिन्न देशों की जनसंख्या वृद्धि दरों और उनके सामाजिक और आर्थिक प्रभावों पर चर्चा करते हैं, छात्रों को अपने विचार और अनुभव साझा करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

2. **अनुसंधान परियोजनाएँ:** छात्र जनसंख्या से संबंधित एक अनुसंधान परियोजना बना सकते हैं, जिसमें वे स्थानीय जनसंख्या के विभिन्न पहलुओं, जैसे जन्म दर, मृत्यु दर और प्रवास पर डेटा एकत्र करते हैं। उदाहरण: छात्र अपने शहर की जनसंख्या की विविधता पर एक परियोजना बना सकते हैं, जिसमें वे विभिन्न समुदायों की संख्या, शिक्षा और रोजगार की स्थिति का विश्लेषण करते हैं।

3. **मल्टीमीडिया प्रस्तुतीकरण:** छात्रों को वीडियो, प्रस्तुतीकरण और इंटरैक्टिव गेम्स का उपयोग करके जानकारी प्रस्तुत करने के लिए कहा जाता है। उदाहरण: छात्र जनसंख्या वृद्धि पर एक मल्टीमीडिया प्रस्तुतीकरण बनाते हैं, जिसमें वे लोगों के बीच जागरूकता बढ़ाने के लिए इन्फोग्राफिक्स, वीडियो क्लिप और वृत्तचित्रों का उपयोग करते हैं।

4. **केस स्टडी:** छात्रों को जनसंख्या शिक्षा की समस्याओं और समाधानों का गहराई से विश्लेषण करने के लिए वास्तविक जीवन के केस स्टडी दिए जाते हैं। उदाहरण: छात्र किसी देश में जनसंख्या वृद्धि की समस्याओं और प्रभावों पर एक केस स्टडी तैयार कर सकते हैं, जिसमें वे समाधान के रूप में विभिन्न परिवार नियोजन नीतियों की प्रभावशीलता का विश्लेषण करेंगे।

5. **निबंध लेखन:** छात्रों को जनसंख्या से संबंधित विषयों पर निबंध या ब्लॉग पोस्ट लिखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। उदाहरण: छात्र "मेरे शहर में जनसंख्या वृद्धि: समस्याएँ और संभावनाएँ" शीर्षक से एक निबंध लिख सकते हैं, जिसमें वे अपने विचार और सिफारिशें प्रस्तुत करेंगे।

निष्कर्ष: जनसंख्या शिक्षा के प्रभावी शिक्षण विधियाँ छात्रों में जागरूकता और जिम्मेदारी की भावना पैदा करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। चर्चा के माध्यम से समझ, अनुसंधान परियोजनाओं के माध्यम से गहराई, मल्टीमीडिया प्रस्तुतियों के माध्यम से रचनात्मकता, केस स्टडी के माध्यम से यथार्थवाद, और निबंध लेखन के माध्यम से आलोचनात्मक सोच को बढ़ाया जा सकता है। ये विधियाँ छात्रों को जनसंख्या के विभिन्न पहलुओं के बारे में जानने और एक बेहतर और अधिक जागरूक समाज के निर्माण में भाग लेने के लिए तैयार करती हैं।

14. Write five steps to develop environmental values among the students. শিক্ষার্থীদের মধ্যে পরিবেশের মূল্যবোধ গড়ে তোলার পাঁচটি পদ্ধতি লিখুন। छात्रों में पर्यावरणीय मूल्यों को विकसित करने के पाँच उपाय लिखिए। **2023, 2024**

Or, write five steps to develop environmental values among the students in secondary schools. মাধ্যমিক বিদ্যালয়ের শিক্ষার্থীদের মধ্যে পরিবেশগত মূল্যবোধ বিকাশের জন্য পাঁচটি পদক্ষেপ লিখুন। माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के बीच पर्यावरणीय मूल्यों को विकसित करने के लिए पाँच चरण लिखिए। **2025**

Ans: भूमिका: छात्रों में पर्यावरणीय मूल्यों का विकास जागरूकता, जिम्मेदारी की भावना और प्रकृति के प्रति प्रेम पैदा करता है। यह भावी पीढ़ियों के लिए सतत विकास और पर्यावरण संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण है। यहां छात्रों में पर्यावरणीय मूल्यों को बढ़ावा देने के पांच प्रभावी तरीकों पर चर्चा की गई है।

पर्यावरणीय मूल्यों को बढ़ावा देने के पांच तरीके

1. प्रकृति का अवलोकन और अनुभव: छात्रों को प्रकृति के साथ सीधा संपर्क स्थापित करने दें। इसके लिए वे पार्कों, जंगलों में लंबी पैदल यात्रा पर जा सकते हैं, या नदियों और समुद्र तटों का दौरा कर सकते हैं। प्रकृति के विभिन्न पहलुओं और इसकी सुंदरता का अनुभव करके उनके भीतर पर्यावरण के प्रति प्रेम और सम्मान पैदा होता है।

2. शैक्षिक कार्यशालाएं और सेमिनार: पर्यावरण संरक्षण, जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा पर कार्यशालाएं और सेमिनार आयोजित करें। विशेषज्ञों द्वारा छात्रों को पर्यावरण से संबंधित विभिन्न

जानकारी और जागरूकता प्रदान की जाए। इससे उन्हें पर्यावरणीय समस्याओं के बारे में जानने और उनके समाधान के तरीकों से अवगत होने में मदद मिलती है।

3. परियोजनाएं और अनुसंधान: छात्रों को विभिन्न पर्यावरण संरक्षण परियोजनाओं, जैसे- वृक्षारोपण, अपशिष्ट प्रबंधन और पुन: प्रयोज्य उत्पादों के उपयोग में शामिल करें। अनुसंधान गतिविधियों के माध्यम से वे पर्यावरण के विभिन्न पहलुओं के बारे में गहराई से सोचना सीखेंगे और समस्या-समाधान के लिए अपने स्वयं के विचार विकसित करने के लिए प्रोत्साहित होंगे।

4. स्वैच्छिक गतिविधियां: छात्रों को विभिन्न पर्यावरण संरक्षण स्वैच्छिक गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करें, जैसे- स्वच्छता अभियान और प्लास्टिक प्रदूषण उन्मूलन अभियान। इन गतिविधियों में भाग लेकर वे अपने समाज के लिए काम करने का अनुभव प्राप्त करेंगे और पर्यावरण की सुरक्षा में योगदान कर पाएंगे।

5. विभिन्न मीडिया के माध्यम से प्रचार: छात्रों को पर्यावरण संरक्षण के बारे में जागरूक करने के लिए विभिन्न मीडिया, जैसे- सोशल मीडिया, वीडियो और ब्लॉग का उपयोग करें। अपने विचारों और अवधारणाओं को व्यक्त करके छात्र दूसरों के बीच भी जागरूकता बढ़ा पाएंगे, जिससे पर्यावरण के प्रति उनकी जिम्मेदारी की भावना बढ़ेगी।

निष्कर्ष: छात्रों में पर्यावरणीय मूल्यों को विकसित करना एक लंबी प्रक्रिया है, जो उनके विचारों और व्यवहार को प्रभावित करती है। ऊपर बताए गए पांच तरीकों के माध्यम से हम छात्रों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता, जिम्मेदारी की भावना और प्राकृतिक संसाधनों के प्रति प्रेम पैदा कर सकते हैं। ये पहलें सामूहिक रूप से हमारी भावी पीढ़ियों को एक स्वस्थ और टिकाऊ पर्यावरण बनाने में मदद करेंगी।

15. What is the population dynamics in the context of India? ভারতবর্ষের প্রসঙ্গে জনসংখ্যা গতি (Population dynamics) বলতে কি বোঝেন? भारत के संदर्भ में जनसंख्या गतिकी से आप क्या समझते हैं? **2023, 2024**

Ans: भूमिका: भारत की जनसंख्या गतिकी (Population Dynamics), अर्थात जनसंख्या में परिवर्तन और उससे संबंधित विभिन्न प्रक्रियाएँ, एक महत्वपूर्ण विषय है जो देश के सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय

पहलुओं को प्रभावित करता है। यह जनसंख्या की वृद्धि, कमी, स्थानांतरण और जनसंख्या की संरचना के आधार पर विश्लेषित किया जाता है। भारत के संदर्भ में, जनसंख्या गतिकी देश के विकास के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह सामाजिक नीति, आर्थिक योजना और पर्यावरण संरक्षण को प्रभावित करता है।

जनसंख्या गतिकी के मुख्य पक्ष:

1. **जनसंख्या वृद्धि:** भारत की जनसंख्या वृद्धि दर अभी भी ऊँची है, लेकिन पिछले कुछ दशकों से यह धीरे-धीरे घट रही है। जन्मदर और मृत्यु दर में बदलाव महानगरों और ग्रामीण क्षेत्रों में अलग-अलग प्रभाव डालते हैं।

2. **जनसंख्या की संरचना:** भारत की जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा किशोरों और युवाओं से बना है, जिससे श्रमशक्ति के विकास और सामाजिक परिवर्तन की संभावनाएँ बढ़ती हैं।

3. **स्थानांतरण और शहरीकरण:** भारत तेजी से शहरीकरण की ओर बढ़ रहा है, जिससे शहरों की जनसंख्या बढ़ रही है और ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर स्थानांतरण की प्रवृत्ति भी बढ़ रही है।

4. **जनसंख्या का स्वास्थ्य और शिक्षा:** स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार, स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच और महामारियों का प्रभाव जनसंख्या वृद्धि से जुड़ा हुआ है। इसी प्रकार, शिक्षा का स्तर बढ़ने से जनसंख्या की गुणवत्ता में सुधार होता है।

5. **आर्थिक प्रभाव:** जनसंख्या वृद्धि अर्थव्यवस्था की कार्यक्षमता और रोजगार सृजन को प्रभावित करती है। इसके साथ ही गरीबी कम करने के लिए आवश्यक कदम उठाना भी ज़रूरी है।

उपसंहार: भारत की जनसंख्या गतिकी देश के आर्थिक विकास, सामाजिक परिवर्तन और पर्यावरण पर गहरा प्रभाव डालती है। वृद्धि, संरचना, स्थानांतरण और स्वास्थ्य-शिक्षा से जुड़ी चुनौतियों से निपटने के लिए योजनाबद्ध नीतियाँ और जागरूकता आवश्यक है। सही कदम उठाकर देश के विकास और सामाजिक कल्याण को सुनिश्चित किया जा सकता है।

www.dascoaching.in

16. What are the sustainable lifestyles for betterment of Environment? পরিবেশের উন্নয়নে সুস্থিত জীবনশৈলীগুলি কী কী? पर्यावरण सुधार के लिए सतत जीवनशैली क्या हैं? **2023, 2024**

Ans: <u>भूमिका:</u> सतत जीवनशैली का अर्थ है ऐसा जीवन जीना जो पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव को कम करे और सीमित संसाधनों के उचित उपयोग को सुनिश्चित करे। वर्तमान समय में पर्यावरण संबंधी समस्याएँ बढ़ रही हैं, और इन समस्याओं के समाधान के लिए हमारे दैनिक जीवन में सतत जीवनशैली का प्रतिबिंब होना आवश्यक है। यह न केवल पर्यावरण सुधार में सहायक है, बल्कि हमारे स्वास्थ्य और समग्र जीवन गुणवत्ता को भी बढ़ाता है।

<u>पर्यावरण सुधार में सतत जीवनशैली:</u>

1. **पुनः उपयोग योग्य उत्पादों का प्रयोग:** प्लास्टिक के बजाय कांच, स्टेनलेस स्टील या अन्य पुनः उपयोग योग्य सामग्री का प्रयोग करना चाहिए। इससे कचरा कम होता है और प्रदूषण भी घटता है।
2. **पानी और बिजली की बचत:** अनावश्यक खर्च से बचें, ऊर्जा-संरक्षण वाले उपकरणों का प्रयोग करें और जल प्रबंधन के प्रति जागरूकता बढ़ाएँ। इससे प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण संभव है।
3. **स्थानीय भोजन का सेवन:** स्थानीय बाजार से फल और सब्ज़ियाँ खरीदें, जिससे परिवहन लागत और गैस उत्सर्जन कम होता है। यह स्थानीय किसानों को भी सहारा देता है।
4. **साइकिल या पैदल चलना:** छोटी दूरी पर वाहन का प्रयोग न करके साइकिल चलाना या पैदल चलना चाहिए। इससे CO_2 उत्सर्जन कम होता है और स्वास्थ्य भी अच्छा रहता है।
5. **टिकाऊ परिवहन प्रणाली:** सार्वजनिक परिवहन, कारपूलिंग और इलेक्ट्रिक वाहन का उपयोग करना चाहिए। इससे पर्यावरण पर दबाव कम होता है।
6. **नई तकनीकों का प्रयोग:** सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा जैसी नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का प्रयोग करना चाहिए। इससे जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता घटती है।

www.dascoaching.in

7. **कचरे में कमी:** भोजन और अन्य उत्पादों के अपव्यय को कम करने के लिए जागरूकता फैलानी चाहिए। रीसाइक्लिंग और कंपोस्टिंग से कचरे में कमी लाई जा सकती है।

8. **जैविक खेती का समर्थन:** जैविक उत्पादों को खरीदना और उनके उत्पादन को प्रोत्साहित करना चाहिए। इससे रसायनों का प्रयोग कम होता है और मिट्टी की उर्वरता बढ़ती है।

उपसंहार: सतत जीवनशैली अपनाना पर्यावरण सुधार के लिए आवश्यक है। यह प्रकृति के प्रति हमारी जिम्मेदारी है और आने वाली पीढ़ियों के लिए स्वस्थ और सुरक्षित वातावरण तैयार करने में सहायक है। प्रत्येक व्यक्ति का छोटा-सा प्रयास भी बड़े परिवर्तन की ओर ले जा सकता है। इसलिए, हमें इस जीवनशैली को बढ़ावा देना चाहिए और आने वाली पीढ़ियों के लिए बेहतर और स्वस्थ वातावरण की नींव रखनी चाहिए।

17. Define population dynamics. State the present status of population dynamics with respect to India. জনসংখ্যা গতিবিদ্যার (Population dynamics) সংজ্ঞা দাও। ভারতের বর্তমান জনসংখ্যা গতিবিদ্যার অবস্থা বর্ণনা করো। जनसंख्या गतिकी (Population dynamics) को परिभाषित कीजिए। भारत के संदर्भ में जनसंख्या गतिकी की वर्तमान स्थिति का उल्लेख कीजिए। **2025**

Ans: प्रस्तावना: जनसंख्या कोई स्थिर विषय नहीं है, बल्कि यह एक परिवर्तनशील प्रक्रिया है। जब किसी विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र की जनसंख्या के आकार, घनत्व और संरचना में होने वाले निरंतर परिवर्तनों का वैज्ञानिक दृष्टिकोण से विश्लेषण किया जाता है, तो उसे **जनसंख्या गतिशीलता (Population Dynamics)** कहा जाता है। यह मुख्य रूप से समय के साथ जनसंख्या में होने वाली कमी-वृद्धि और उसके पीछे के कारणों की जांच करता है।

परिभाषा: सामान्य शब्दों में, जन्म दर, मृत्यु दर और प्रवासन (Migration) के प्रभाव से किसी क्षेत्र की जनसंख्या में समय के साथ जो परिवर्तन आता है, उसे जनसंख्या गतिशीलता कहते हैं। पर्यावरण विज्ञान के अनुसार: *"जनसंख्या गतिशीलता जीवन विज्ञान की वह शाखा है जो गतिशील प्रणालियों के रूप में जनसंख्या के आकार और आयु संरचना, और उन्हें संचालित करने वाली जैविक एवं पर्यावरणीय प्रक्रियाओं का अध्ययन करती है।"*

इसके तीन मुख्य निर्धारक हैं:

1. **प्रजनन क्षमता (Fertility)**
2. **मृत्यु दर (Mortality)**
3. **प्रवासन (Migration)**

भारत की वर्तमान जनसंख्या गतिशीलता की स्थिति (2025-26 का संदर्भ): भारत वर्तमान में अपने जनसांख्यिकीय विकास के एक महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़ा है। भारत की वर्तमान जनसंख्या गतिशीलता की मुख्य विशेषताएं निम्नलिखित हैं:

1. **जनसंख्या विस्फोट से स्थिरता की ओर:** हालांकि भारत वर्तमान में दुनिया का सबसे अधिक आबादी वाला देश है, लेकिन राहत की बात यह है कि भारत अपनी **कुल प्रजनन दर (TFR)** को कम करने में सफल रहा है। वर्तमान में भारत की औसत TFR लगभग **2.0** है, जो प्रतिस्थापन दर (2.1) से कम है। अर्थात, जनसंख्या वृद्धि की गति धीमी हो रही है।
2. **जनसांख्यिकीय लाभांश (Demographic Dividend):** भारत की जनसंख्या गतिशीलता का एक सकारात्मक पहलू कार्यशील जनसंख्या (15-59 वर्ष) की अधिकता है। भारत की औसत आयु लगभग 28-29 वर्ष है, जो इसे एक 'युवा राष्ट्र' बनाती है। सही शिक्षा और कौशल के माध्यम से इस विशाल युवा शक्ति को आर्थिक विकास में लगाना ही वर्तमान की मुख्य चुनौती है।
3. **मृत्यु दर में कमी और औसत जीवन प्रत्याशा में वृद्धि:** बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं और टीकाकरण के कारण शिशु मृत्यु दर और मातृ मृत्यु दर में उल्लेखनीय कमी आई है। परिणामस्वरूप, भारतीयों की औसत जीवन प्रत्याशा बढ़कर अब 70 वर्ष से अधिक हो गई है।
4. **तेजी से शहरीकरण और प्रवासन:** रोजगार और बेहतर जीवन स्तर की तलाश में गांवों से शहरों की ओर प्रवासन की दर बढ़ी है। इसके कारण भारत के बड़े शहरों में जनसंख्या का घनत्व असामान्य रूप से बढ़ रहा है, जिससे शहरी नियोजन पर दबाव पड़ रहा है।
5. **वृद्धावस्था से जुड़ी समस्याएं:** यद्यपि भारत एक युवा देश है, लेकिन जन्म दर में कमी और चिकित्सा व्यवस्था में सुधार के कारण आने वाले दशकों में वृद्ध लोगों की संख्या में तेजी से वृद्धि होने का पूर्वानुमान है।

निष्कर्ष: निष्कर्षतः, भारत की जनसंख्या गतिशीलता वर्तमान में संख्यात्मक वृद्धि के बजाय गुणात्मक परिवर्तन की ओर अधिक बढ़ रही है। जहाँ एक ओर जन्म दर को नियंत्रित करना संभव हुआ है, वहीं दूसरी

ओर विशाल युवा वर्ग को संसाधन में बदलने की अपार संभावनाएं पैदा हुई हैं। भारत के सतत विकास के लिए इन गतिशील परिवर्तनों को ध्यान में रखते हुए उचित शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार नीतियां बनाना अत्यंत आवश्यक है।

18. Explain the concept of 'Green House Effect'. State two remedies of Green House effect on the environment. গ্রিন হাউস এফেক্ট' বা 'সবুজ ঘর প্রভাব'-এর ধারণাটি ব্যাখ্যা করো। পরিবেশের ওপর গ্রিন হাউস এফেক্টের দুটি প্রতিকার উল্লেখ করো। 'ग्रीन हाउस प्रभाव' (Green House Effect) की अवधारणा को समझाइए। पर्यावरण पर ग्रीन हाउस प्रभाव के दो उपचारों (remedies) का उल्लेख कीजिए। **2025**

Ans: <u>प्रस्तावना</u>: वर्तमान विश्व में पर्यावरणीय संकटों में से एक प्रमुख समस्या 'ग्रीन हाउस इफेक्ट' या 'हरित गृह प्रभाव' है। मुख्य रूप से वायुमंडल में कुछ विशिष्ट गैसों की मात्रा बढ़ने के कारण पृथ्वी के औसत तापमान में निरंतर वृद्धि हो रही है। हालांकि यह एक प्राकृतिक प्रक्रिया है, लेकिन मानवीय गतिविधियों के कारण वर्तमान में इसने विकराल रूप धारण कर लिया है, जो ग्लोबल वार्मिंग (विश्व उष्णायन) का मुख्य कारण है।

<u>ग्रीन हाउस इफेक्ट की अवधारणा:</u> 'ग्रीन हाउस' शब्द का मूल अर्थ ठंडे देशों में कांच से बने घरों से है, जहाँ अत्यधिक ठंड में पौधों को जीवित रखने के लिए सूर्य की गर्मी को भीतर रोक लिया जाता है। कांच का गुण यह है कि यह सूर्य की लघु तरंगदैर्ध्य वाली किरणों को अंदर आने देता है, लेकिन अंदर की गर्म वस्तुओं से विकीर्ण होने वाली दीर्घ तरंगदैर्ध्य वाली ऊष्मीय किरणों को बाहर जाने से रोकता है। परिणामस्वरूप, कांच के घर के अंदर का तापमान बाहर की तुलना में बहुत अधिक रहता है।

हमारा वायुमंडल भी ठीक इसी कांच के घर की तरह काम करता है। वायुमंडल में मौजूद कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2), मीथेन (CH_4), नाइट्रस ऑक्साइड (N_2O), क्लोरोफ्लोरोकार्बन (CFC) और जलवाष्प सूर्य से आने वाली गर्मी को सोख लेते हैं या उसे पुनः पृथ्वी की सतह पर परावर्तित कर देते हैं। इससे पृथ्वी का औसत तापमान एक निश्चित स्तर (लगभग 15°C) पर बना रहता है, जो जीवन के विकास के लिए आवश्यक है। लेकिन वर्तमान में जीवाश्म ईंधन के दहन और वनों की कटाई के कारण इन गैसों का घनत्व असामान्य दर से बढ़ रहा है, जिससे पृथ्वी पहले की तुलना में बहुत अधिक गर्म हो रही है। इसे ही 'ग्रीन हाउस इफेक्ट' कहा जाता है।

<u>पर्यावरण पर ग्रीन हाउस इफेक्ट के दो उपाय:</u> ग्रीन हाउस प्रभाव के हानिकारक प्रभावों को नियंत्रित करने के लिए निम्नलिखित दो उपचारात्मक उपाय अत्यंत महत्वपूर्ण हैं:

1. **जीवाश्म ईंधन के उपयोग में कमी और वैकल्पिक ऊर्जा का उपयोग:** ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन का मुख्य स्रोत कोयला, पेट्रोल और डीजल जैसे जीवाश्म ईंधनों का दहन है। इसके समाधान के रूप में सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, जलविद्युत और भू-तापीय ऊर्जा जैसे गैर-पारंपरिक और नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग बढ़ाना होगा। इससे वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा में उल्लेखनीय कमी आएगी।
2. **व्यापक स्तर पर वृक्षारोपण और वन संरक्षण:** पौधे प्रकाश संश्लेषण (Photosynthesis) की प्रक्रिया के माध्यम से वायुमंडल से कार्बन डाइऑक्साइड ग्रहण करते हैं और ऑक्सीजन छोड़ते हैं। इसलिए, वायुमंडल में कार्बन का संतुलन बनाए रखने के लिए वन संरक्षण और नए पेड़ लगाना (Af-forestation) अनिवार्य है। वन पृथ्वी के 'प्राकृतिक फेफड़े' हैं, जो ग्रीन हाउस गैसों की अधिकता को कम करके पर्यावरण को ठंडा रखने में मदद करते हैं।

<u>निष्कर्ष:</u> निष्कर्षतः, ग्रीन हाउस इफेक्ट केवल एक वैज्ञानिक शब्द नहीं है, बल्कि यह मानव सभ्यता के अस्तित्व के लिए एक बड़ी चुनौती है। यदि अभी कार्बन उत्सर्जन को नियंत्रित नहीं किया गया, तो समुद्र के जलस्तर में वृद्धि और जलवायु परिवर्तन के कारण पारिस्थितिकी तंत्र नष्ट हो जाएगा। इसलिए, नियोजित तकनीकी विकास और पर्यावरणीय जागरूकता ही पृथ्वी को इस संकट से बचा सकती है।

19. Discuss the Impact of Population explosion on Environment with examples. পরিবেশের ওপর জনসংখ্যা বিস্ফোরণের প্রভাব উদাহরণসহ আলোচনা করো। पर्यावरण पर जनसंख्या विस्फोट के प्रभाव की उदाहरण सहित चर्चा कीजिए। **2025**

Ans: प्रस्तावना: जब किसी विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र या देश में जनसंख्या की वृद्धि उस क्षेत्र के प्राकृतिक संसाधनों की तुलना में कई गुना बढ़ जाती है और संतुलन का अभाव हो जाता है, तो उसे जनसंख्या विस्फोट कहा जाता है। वर्तमान विश्व में पर्यावरणीय संकट के प्रमुख कारणों में से एक यह असामान्य जनसंख्या वृद्धि है। मनुष्यों की आवश्यकताओं को पूरा करने की होड़ में प्राकृतिक पर्यावरण आज चरम तबाही का सामना कर रहा है।

पर्यावरण पर प्रभाव: मुख्य बिंदु

जनसंख्या विस्फोट के कारण पर्यावरण पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभावों की चर्चा नीचे की गई है:

1. **प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन:** बढ़ती जनसंख्या की भोजन की आवश्यकता को पूरा करने के लिए कृषि भूमि का विस्तार हो रहा है, जिससे खनिज संसाधनों, जल और वन संसाधनों पर भारी दबाव पड़ रहा है। परिणामस्वरूप, प्राकृतिक संसाधनों के भंडार तेजी से समाप्त हो रहे हैं।
2. **वनोन्मूलन (Deforestation):** आवास निर्माण, कारखाने स्थापित करने और ईंधन की जरूरतों के लिए मनुष्य अंधाधुंध पेड़ काट रहा है।
    - **उदाहरण:** अमेज़न बेसिन या भारत के हिमालय से सटे क्षेत्रों में मानव बस्तियाँ बढ़ने के कारण वन क्षेत्र सिकुड़ रहे हैं, जिससे पारिस्थितिकी तंत्र (Ecosystem) का संतुलन बिगड़ रहा है।
3. **वायुमंडलीय प्रदूषण और वैश्विक तापन (Global Warming):** जनसंख्या बढ़ने के साथ-साथ वाहनों की संख्या और कारखानों का उत्पादन बढ़ रहा है। इसके परिणामस्वरूप, कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2) और मीथेन (CH_4) जैसी ग्रीनहाउस गैसों की मात्रा बढ़ रही है और पृथ्वी गर्म हो रही है।
4. **जल संकट और जल प्रदूषण:** मनुष्य के दैनिक कार्यों और कृषि में पानी की मांग को पूरा करने के लिए भूजल (Ground water) का अत्यधिक दोहन किया जा रहा है। इसके साथ ही, औद्योगिक कचरा और सीवेज का गंदा पानी नदियों में मिलकर पानी को उपयोग के अयोग्य बना रहा है।
5. **जैव विविधता का ह्रास:** मानवीय अतिक्रमण के कारण वन्यजीवों के प्राकृतिक आवास नष्ट हो रहे हैं। इसके कारण पौधों और जीवों की कई प्रजातियाँ विलुप्त होती जा रही हैं।
    - **उदाहरण:** सुंदरबन के मैंग्रोव वनों के विनाश के कारण बाघों सहित कई वन्यजीवों का अस्तित्व आज खतरे में है।
6. **अपशिष्ट प्रबंधन की समस्या:** विशाल आबादी से प्रतिदिन भारी मात्रा में ठोस और तरल कचरा (विशेषकर प्लास्टिक) उत्पन्न हो रहा है, जो उचित प्रबंधन के अभाव में मिट्टी और जल को जहरीला बना रहा है।

निष्कर्ष: निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि जनसंख्या विस्फोट पर्यावरण की वहन क्षमता (Carrying capacity) को पार कर चुका है। यदि हम अभी से नियोजित जनसंख्या नियंत्रण और सतत विकास (Sustainable Development) के मार्ग पर नहीं चले, तो आने वाले दिनों में पर्यावरणीय आपदा और अधिक

भयावह रूप ले लेगी। पर्यावरण की रक्षा के लिए जन जागरूकता बढ़ाना और 'छोटा परिवार, सुखी परिवार' के मंत्र को अमली जामा पहनाना बेहद जरूरी है।

10 Marks Question

1. 'Population explosion is the ultimate cause of all types of social pollution in India'. Discuss with examples. 'ভারতে সমস্ত ধরনের সামাজিক দূষণের মূল কারণ হল জনসংখ্যার বিস্ফোরণ'— বিবৃতিটি উদাহরণসহ আলোচনা করুন। 'भारत में सभी प्रकार के सामाजिक प्रदूषण का मुख्य कारण जनसंख्या विस्फोट है'— इस कथन पर उदाहरण सहित चर्चा कीजिए। **2018, 2021**

Ans: भूमिका: भारत की जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है, जो देश के समग्र विकास और सामाजिक समरसता के लिए एक बड़ी चुनौती बन गई है। जनसंख्या विस्फोट केवल संख्या में वृद्धि नहीं है, बल्कि यह विभिन्न प्रकार के सामाजिक प्रदूषण का स्रोत भी है। सामाजिक प्रदूषण से तात्पर्य है – सामाजिक व्यवस्था, स्वास्थ्य, पर्यावरण और अर्थव्यवस्था पर नकारात्मक प्रभाव।

इस संदर्भ में, "भारत में सभी प्रकार के सामाजिक प्रदूषण का मूल कारण जनसंख्या विस्फोट है" इस कथन का विश्लेषण किया जाएगा-

1. बेरोज़गारी: भारत में जनसंख्या वृद्धि के कारण रोज़गार के अवसर कम हो रहे हैं। रोजगार सृजन की गति जनसंख्या वृद्धि के साथ तालमेल नहीं बैठा पा रही है। परिणामस्वरूप, बेरोज़गारी बढ़ रही है, जिससे समाज में हताशा और आपराधिक गतिविधियों का जन्म होता है। **उदाहरण:** शहरों में युवाओं के बीच बेरोज़गारी बढ़ने के कारण कई लोग अपराध में शामिल हो रहे हैं, जिससे सामाजिक अस्थिरता पैदा हो रही है।

2. स्वास्थ्य समस्याएँ: जनसंख्या विस्फोट स्वास्थ्य सेवाओं पर भारी दबाव डालता है। अस्पताल और स्वास्थ्य सुविधाएँ सीमित होने से रोगियों की संख्या बढ़ रही है, जिससे सेवा प्रदायगी बाधित होती है। **उदाहरण:** शहरी क्षेत्रों में डॉक्टरों की कमी के कारण मरीजों को इलाज के लिए लंबे समय तक इंतजार करना पड़ता है, जिससे स्वास्थ्य संकट पैदा हो रहा है।

3. शिक्षा की कमी: जनसंख्या विस्फोट से शैक्षणिक संस्थानों पर दबाव बढ़ता है। अधिक छात्रों के कारण गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना कठिन हो जाता है। **उदाहरण:** सरकारी स्कूलों में शिक्षकों की अपर्याप्त संख्या के कारण छात्रों के बीच उच्च शिक्षा के अवसर घट जाते हैं, जिससे गरीबी बढ़ती है।

4. पर्यावरण पर प्रभाव: जनसंख्या विस्फोट के कारण शहरों और गाँवों में अत्यधिक निर्माण और बुनियादी ढाँचे का दबाव पड़ता है। इससे वायु और जल प्रदूषण बढ़ता है। **उदाहरण:** दिल्ली और मुंबई में वायु गुणवत्ता में गिरावट का एक बड़ा कारण जनसंख्या वृद्धि और वाहनों की बढ़ती संख्या है।

5. गरीबी: जनसंख्या वृद्धि गरीबी को बढ़ावा देती है। अधिक जनसंख्या घनत्व के कारण संसाधनों का समान वितरण नहीं हो पाता, जिससे कई लोग गरीबी का शिकार हो जाते हैं। **उदाहरण:** ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक जनसंख्या होने से लोगों के बीच खाद्य सुरक्षा, स्वास्थ्य सेवाएँ और शिक्षा पाने के अवसर घट जाते हैं।

उपसंहार: भारत में जनसंख्या विस्फोट सामाजिक प्रदूषण का मूल कारण बनकर कार्य करता है। यह बेरोज़गारी, स्वास्थ्य समस्याएँ, शिक्षा की कमी, पर्यावरण प्रदूषण और गरीबी जैसी समस्याओं को और अधिक बढ़ाता है। इसलिए जनसंख्या नियंत्रण के उपाय करना अत्यंत आवश्यक है, जिससे सामाजिक प्रदूषण को कम किया जा सके और एक स्वस्थ एवं संतुलित समाज का निर्माण हो। सरकार को जनसंख्या शिक्षा और परिवार नियोजन पर अधिक ध्यान देना चाहिए।

2. Discuss the aims and objectives of Environmental Education. Discuss the role of teacher in creating environmental awareness among students. পরিবেশ বিদ্যার উদ্দেশ্য ও লক্ষ্যগুলি বর্ণনা করুন। শিক্ষার্থীদের মধ্যে পরিবেশ সচেতনতা তৈরী করতে শিক্ষকের ভূমিকা আলোচনা করুন। पर्यावरण शिक्षा के उद्देश्य लिखिए। छात्रों में पर्यावरण जागरूकता विकसित करने में शिक्षक की भूमिका पर चर्चा कीजिए। **2018, 2020**

Ans: भूमिका: पर्यावरण शिक्षा एक विशेष शैक्षिक क्षेत्र है जो प्रकृति, पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास के महत्व पर ज़ोर देती है। इसका उद्देश्य केवल जानकारी देना ही नहीं बल्कि विद्यार्थियों को जागरूक बनाना है ताकि वे पर्यावरणीय समस्याओं को पहचान सकें और उनके समाधान में सक्रिय भूमिका निभा सकें। आधुनिक युग में, जब जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण और संसाधनों का अत्यधिक दोहन मानव अस्तित्व

के लिए खतरा बन चुका है, पर्यावरण शिक्षा भविष्य की पीढ़ी को जिम्मेदार और पर्यावरण-सचेत नागरिक बनाने में अत्यंत आवश्यक भूमिका निभाना करती है।

उद्देश्य और लक्ष्य:

1. **पर्यावरण का महत्व समझाना:** इसका प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों को यह समझाना है कि मानव जीवन, जैव विविधता और पारिस्थितिक संतुलन का आधार एक स्वस्थ पर्यावरण है। इस जागरूकता से वे न केवल अपने लिए बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी एक सुरक्षित और स्वच्छ वातावरण बनाने के लिए प्रेरित होते हैं।

2. **पर्यावरणीय समस्याओं की पहचान:** पर्यावरण शिक्षा विद्यार्थियों को वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, वनों की कटाई, भूमि क्षरण, जैव विविधता की हानि और जलवायु परिवर्तन जैसी गंभीर समस्याओं को समझने और उनका विश्लेषण करने की क्षमता प्रदान करती है। इससे वे इन समस्याओं के कारण और परिणाम जान पाते हैं और समाधान की दिशा में कार्य कर सकते हैं।

3. **सतत विकास की अवधारणा:** विद्यार्थियों को यह सिखाया जाता है कि विकास और संरक्षण के बीच संतुलन कितना आवश्यक है। वे सीखते हैं कि अंधाधुंध औद्योगिकीकरण, शहरीकरण और उपभोक्तावादी जीवनशैली से पर्यावरण पर कितना नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, और क्यों पर्यावरण-हितैषी आदतें अपनाना आवश्यक है।

4. **प्राकृतिक संसाधनों का प्रबंधन:** विद्यार्थियों को जल, मृदा, ऊर्जा और वन जैसे संसाधनों का विवेकपूर्ण और सही उपयोग करना सिखाया जाता है। उन्हें संरक्षण की विधियाँ जैसे वर्षा जल संचयन, पुनर्चक्रण, अक्षय ऊर्जा का उपयोग और अपशिष्ट प्रबंधन के बारे में जानकारी दी जाती है। इससे उनमें जिम्मेदारी की भावना विकसित होती है।

5. **समाज में जागरूकता बढ़ाना:** पर्यावरण शिक्षा केवल व्यक्ति तक सीमित नहीं रहती बल्कि समाज में सामूहिक जागरूकता भी पैदा करती है। विद्यार्थी संदेशवाहक की तरह कार्य करते हुए

www.dascoaching.in

अपने परिवार और समुदाय में पर्यावरण संरक्षण का संदेश फैलाते हैं। वे अभियानों, रैलियों और सामुदायिक कार्यक्रमों में भाग लेकर दूसरों को भी प्रेरित करते हैं।

शिक्षक की भूमिका:

1. **आदर्श आचरण:** शिक्षक स्वयं पर्यावरण-सुरक्षात्मक आदतें अपनाकर विद्यार्थियों के लिए उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। जैसे- प्लास्टिक का कम प्रयोग करना, जल और बिजली की बचत करना या पेड़ लगाना। यह विद्यार्थियों को प्रेरित करता है कि वे भी इन आदतों का अनुसरण करें।

2. **चर्चा और वाद-विवाद:** शिक्षक पर्यावरणीय विषयों पर चर्चा और वाद-विवाद का आयोजन करके विद्यार्थियों की सोचने और विश्लेषण करने की क्षमता को बढ़ाते हैं। इससे वे समस्याओं की गहराई को समझ पाते हैं और नए समाधान खोज पाते हैं।

3. **प्रकृति से जुड़ाव:** प्रकृति भ्रमण, शैक्षिक यात्राएँ, पर्यावरण शिविर और जैव विविधता अवलोकन जैसी गतिविधियाँ विद्यार्थियों को प्रकृति के साथ भावनात्मक रूप से जोड़ती हैं। इस जुड़ाव से उनमें सम्मान, संवेदना और जिम्मेदारी की भावना बढ़ती है।

4. **परियोजनाएँ और गतिविधियाँ:** शिक्षक पेड़ लगाना, स्वच्छता अभियान, अपशिष्ट अलगाव, कम्पोस्ट बनाना और ऊर्जा बचत जैसे प्रोजेक्ट करवाते हैं। ये गतिविधियाँ विद्यार्थियों को व्यावहारिक अनुभव प्रदान करती हैं और उन्हें पर्यावरण संरक्षण में प्रत्यक्ष भागीदारी का अवसर देती हैं।

5. **अनुसंधान और जानकारी प्रदान करना:** शिक्षक पर्यावरण से संबंधित नवीन शोध, वैज्ञानिक जानकारी और संरक्षण तकनीकें विद्यार्थियों तक पहुँचाते हैं। इससे उनमें जिज्ञासा, रचनात्मकता और समस्या-समाधान की क्षमता का विकास होता है।

निष्कर्ष: पर्यावरण शिक्षा केवल पाठ्यक्रम तक सीमित नहीं है, यह एक ऐसा आंदोलन है जो स्वस्थ और सुरक्षित भविष्य सुनिश्चित करने की दिशा में कार्य करता है। इस प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि वे विद्यार्थियों में पर्यावरणीय मूल्यों का संचार करते हैं और उन्हें जिम्मेदार नागरिक

बनने के लिए प्रेरित करते हैं। पर्यावरण शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थी न केवल अपने जीवन की गुणवत्ता को बेहतर बनाते हैं बल्कि सतत और स्वस्थ समाज के निर्माण में भी योगदान देते हैं।

3. Discuss the scope, methodology and importance of Population Education. জনসংখ্যা শিক্ষার পরিধি, পদ্ধতি ও গুরুত্ব সম্পর্কে আলোচনা করুন। जनसंख्या शिक्षा का क्षेत्र, पद्धति और महत्व लिखिए। **2019, 2020**

Ans: <u>भूमिका</u>: जनसंख्या शिक्षा एक अत्यंत महत्वपूर्ण क्षेत्र है जो मानव जनसंख्या से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर विचार करता है। यह केवल परिवार नियोजन और जन्म नियंत्रण तक सीमित नहीं है, बल्कि स्वास्थ्य, अर्थव्यवस्था, पर्यावरण और सामाजिक जिम्मेदारी से भी जुड़ा हुआ है। जनसंख्या शिक्षा व्यक्तियों को यह समझने में मदद करती है कि तेज़ी से बढ़ती जनसंख्या के क्या प्रभाव हो सकते हैं और उन्हें जीवन से जुड़े निर्णय लेने में सक्षम बनाती है। यह जीवन-स्तर को सुधारने, संतुलित विकास सुनिश्चित करने और एक स्वस्थ तथा समृद्ध समाज के निर्माण में सहायक है। जनसंख्या की प्रवृत्तियों को समझकर कोई भी देश अपने संसाधनों का उचित प्रबंधन कर सकता है और सतत विकास को साकार कर सकता है।

<u>जनसंख्या शिक्षा का परिधि:</u>

1. **जन्म और मृत्यु दर:** जनसंख्या वृद्धि और कमी की दर का विश्लेषण, उसके कारण और सामाजिक व आर्थिक प्रभाव।

2. **परिवार नियोजन:** परिवार नियोजन की विभिन्न विधियों, उनके स्वास्थ्य संबंधी लाभ और समाज पर उनके सकारात्मक प्रभाव की जानकारी।

3. **स्वास्थ्य शिक्षा:** मातृ स्वास्थ्य, शिशु स्वास्थ्य, पोषण, टीकाकरण, प्रजनन स्वास्थ्य और यौन रोगों की रोकथाम के बारे में जागरूकता।

4. **आर्थिक प्रभाव:** जनसंख्या वृद्धि और आर्थिक विकास के बीच संबंध, रोजगार के अवसर, प्रति व्यक्ति आय और संसाधनों पर दबाव।

www.dascoaching.in

5. **पर्यावरणीय प्रभाव:** जनसंख्या वृद्धि से प्राकृतिक संसाधनों पर पड़ने वाले दबाव, प्रदूषण, वनों की कटाई, जलवायु परिवर्तन और सतत विकास पर प्रभाव।

6. **सामाजिक जिम्मेदारी:** जनसंख्या और सामाजिक न्याय, समानता, लैंगिक संतुलन और सामुदायिक विकास के बीच संबंध।

<u>जनसंख्या शिक्षा के तरीके:</u>

1. **शिक्षा और प्रशिक्षण:** विद्यालयों, महाविद्यालयों और शैक्षिक संस्थानों में जनसंख्या शिक्षा को शामिल करना।

2. **सेमिनार और कार्यशालाएँ:** जनसंख्या संबंधी विषयों पर सेमिनार और कार्यशालाओं का आयोजन करना।

3. **मीडिया का उपयोग:** टेलीविजन, रेडियो, समाचार पत्र और सोशल मीडिया के माध्यम से जनसंख्या शिक्षा का प्रचार।

4. **अनुसंधान और डेटा संग्रह:** जनसंख्या से जुड़े मुद्दों पर शोध और सर्वेक्षण करके जागरूकता बढ़ाना।

5. **सरकारी और निजी पहल:** सरकारी योजनाओं, गैर-सरकारी संगठनों और निजी संस्थाओं के माध्यम से जनसंख्या शिक्षा को लागू करना।

<u>जनसंख्या शिक्षा का महत्व:</u>

1. **ज्ञान और जागरूकता में वृद्धि:** लोगों को जनसंख्या वृद्धि के परिणामों को समझने और सही निर्णय लेने में सक्षम बनाता है।

2. **स्वास्थ्य संरक्षण:** स्वस्थ जीवनशैली अपनाने, बीमारियों से बचाव और यौन व प्रजनन स्वास्थ्य को बढ़ावा देने में मदद करता है।

www.dascoaching.in

3. **आर्थिक विकास:** जनसंख्या नियंत्रण के माध्यम से संसाधनों का उचित उपयोग, रोजगार के अवसर और आर्थिक स्थिरता सुनिश्चित होती है।

4. **पर्यावरण संरक्षण:** जनसंख्या के दबाव को कम करके प्राकृतिक संसाधनों और पर्यावरण की रक्षा करता है।

5. **गरीबी उन्मूलन:** परिवार नियोजन और संसाधनों के सही प्रबंधन से गरीबी कम करने और जीवन स्तर सुधारने का अवसर प्रदान करता है।

उपसंहार: जनसंख्या शिक्षा किसी भी समाज के समग्र विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। यह स्वास्थ्य, अर्थव्यवस्था और पर्यावरण के बीच संबंधों को स्पष्ट करती है और लोगों को जिम्मेदार निर्णय लेने की प्रेरणा देती है। यदि समाज में जनसंख्या शिक्षा को प्राथमिकता दी जाए, तो हम एक जागरूक और सशक्त समाज का निर्माण कर सकते हैं जो संसाधनों की कमी, जलवायु परिवर्तन और आर्थिक असमानता जैसी चुनौतियों का सामना कर सके। एक सुशिक्षित और सचेत जनसंख्या ही वर्तमान और आने वाली पीढ़ियों के लिए समृद्ध, स्थायी और संतुलित भविष्य की गारंटी है।

4. Discuss the goal and objectives of Population Policy of Government of India (2000) and action plan regarding it. ভারতের জাতীয় জনসংখ্যা নীতি 2000-এর লক্ষ্য, উদ্দেশ্য ও কর্মসূচি রূপায়ণের সম্পর্কে আলোচনা করুন। भारत की जनसंख्या नीति 2000 के लक्ष्य, उद्देश्य और कार्ययोजना पर चर्चा कीजिए। **2019, 2021**

Ans: भूमिका: भारत की राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000 एक रणनीतिक और व्यापक ढांचा है, जिसे देश में जनसंख्या वृद्धि और विकास की चुनौतियों का समाधान करने के लिए तैयार किया गया है। इस नीति का उद्देश्य बढ़ती जनसंख्या की आवश्यकताओं और उपलब्ध संसाधनों के बीच संतुलन स्थापित करना है, साथ ही सतत विकास सुनिश्चित करना है। यह नीति न केवल जनसंख्या वृद्धि की दर को नियंत्रित करने पर बल देती है, बल्कि प्रजनन स्वास्थ्य सुधार, मातृ और शिशु मृत्यु दर में कमी, परिवार नियोजन की सुलभता और महिलाओं के स्वास्थ्य, शिक्षा तथा आर्थिक अवसरों के माध्यम से सशक्तिकरण पर भी केंद्रित है। इस प्रकार, यह नीति भारत के सामाजिक समानता, आर्थिक प्रगति और नागरिकों के जीवन की गुणवत्ता को बेहतर बनाने के व्यापक लक्ष्यों का समर्थन करती है।

लक्ष्य और उद्देश्य:

1. **जनसंख्या वृद्धि की दर पर नियंत्रण:** भारत सरकार का मुख्य उद्देश्य जनसंख्या को स्थिर करना था, जिसके लिए वृद्धि दर को 2.1% प्रतिस्थापन स्तर तक लाना आवश्यक था। प्रारंभिक लक्ष्य 2001 तक और आगे 2010 तक इसे प्राप्त करने का रखा गया। यह लक्ष्य आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण था।

2. **स्वास्थ्य सेवाओं और प्रजनन स्वास्थ्य का सुधार:** नीति का उद्देश्य सभी लोगों को विशेषकर ग्रामीण और वंचित क्षेत्रों में, प्रजनन और सामान्य स्वास्थ्य सेवाएँ सुलभ और किफायती बनाना है। साथ ही, परिवार नियोजन और स्वस्थ जीवनशैली के बारे में जागरूकता बढ़ाना भी इसका हिस्सा है।

3. **मातृ और शिशु मृत्यु दर में कमी:** इस नीति का एक प्रमुख उद्देश्य मातृ मृत्यु दर (MMR) और शिशु मृत्यु दर (IMR) को कम करना है, ताकि सुरक्षित मातृत्व और बच्चों के स्वस्थ जीवन की गारंटी दी जा सके। इसके लिए बेहतर प्रसवपूर्व देखभाल, प्रशिक्षित प्रसव सहायकों और टीकाकरण कार्यक्रमों पर बल दिया गया।

4. **महिला सशक्तिकरण:** नीति महिलाओं के स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार के अवसर और निर्णय लेने की क्षमता को बढ़ाने पर विशेष ध्यान देती है। परिवार नियोजन और प्रजनन स्वास्थ्य संबंधी निर्णयों में महिलाओं की भागीदारी को प्रोत्साहित किया गया।

5. **जनसंख्या शिक्षा और जागरूकता:** लोगों में जनसंख्या नियंत्रण, परिवार नियोजन और स्वास्थ्य से संबंधित विषयों पर शिक्षा और जागरूकता बढ़ाना नीति का महत्वपूर्ण उद्देश्य है। इसके लिए औपचारिक शिक्षा प्रणाली के साथ-साथ मीडिया, गैर-सरकारी संगठनों और स्थानीय संस्थाओं की मदद से जागरूकता अभियान चलाए जाते हैं।

कार्यान्वयन की योजनाएँ और कार्यक्रम:

www.dascoaching.in

1. **परिवार नियोजन पहलः** विभिन्न गर्भनिरोधक साधन जैसे कंडोम, गर्भनिरोधक गोलियाँ, अंतर्गर्भाशयी यंत्र (IUDs), नसबंदी और सुरक्षित गर्भपात सेवाओं का प्रचार और प्रसार किया जाता है। यह सभी सुविधाएँ व्यापक स्तर पर उपलब्ध और किफायती बनाई गईं।

2. **स्वास्थ्य सेवा केंद्रों की स्थापनाः** प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र (PHCs), उप-केंद्रों और सामुदायिक स्वास्थ्य क्लीनिकों को सुदृढ़ और विस्तारित किया गया ताकि ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध हों।

3. **शिक्षा और प्रशिक्षण कार्यक्रमः** स्वास्थ्यकर्मियों, स्वयंसेवकों और महिला समूहों को प्रजनन स्वास्थ्य, पोषण और परिवार नियोजन से संबंधित ज्ञान देने के लिए प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। शिक्षा अभियानों का उद्देश्य पुरुषों और महिलाओं दोनों को जागरूक करना है।

4. **सामुदायिक जागरूकता अभियानः** रेडियो, टेलीविजन, अखबारों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से जनजागरूकता फैलाई जाती है। स्थानीय नेताओं, NGOs और स्व-सहायता समूहों को इस अभियान में शामिल किया जाता है ताकि लोग परिवार नियोजन अपनाने के लिए प्रेरित हों।

5. **महिला और बाल स्वास्थ्य कार्यक्रमः** मातृ और शिशु स्वास्थ्य में सुधार के लिए विशेष योजनाएँ शुरू की गईं, जैसे *जननी सुरक्षा योजना* (JSY) सुरक्षित प्रसव के लिए, पोषण कार्यक्रम, और बच्चों को घातक बीमारियों से बचाने हेतु टीकाकरण अभियान।

निष्कर्षः राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000 एक समग्र और दूरदर्शी नीति है, जिसका उद्देश्य सतत जनसंख्या वृद्धि सुनिश्चित करना और लोगों के स्वास्थ्य व कल्याण को बढ़ावा देना है। यह नीति प्रजनन स्वास्थ्य, परिवार नियोजन, महिला सशक्तिकरण और बाल कल्याण जैसे अनेक क्षेत्रों को संबोधित कर समाज को स्वस्थ, उत्पादक और समान अवसर प्रदान करने वाला बनाने का मार्ग प्रशस्त करती है। इस नीति के सफल क्रियान्वयन से जनस्वास्थ्य परिणाम बेहतर होंगे, गरीबी में कमी आएगी, लैंगिक समानता बढ़ेगी और आर्थिक विकास को गति मिलेगी। दीर्घकाल में यह नीति एक समृद्ध और सामाजिक रूप से न्यायपूर्ण भारत के निर्माण में निर्णायक भूमिका निभा सकती है।

5. Discuss the role of teacher in creating environmental awareness among the students. শিক্ষার্থীদের মধ্যে পরিবেশ সচেতনতা তৈরী করতে শিক্ষকের ভূমিকা আলোচনা করুন। छात्रों में पर्यावरण जागरूकता विकसित करने में शिक्षक की भूमिका लिखिए। **2022**

Ans: <u>भूमिका</u>: आज के समय में पर्यावरणीय समस्याएँ विश्व की सबसे गंभीर चुनौतियों में से एक बन गई हैं। जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई, प्रदूषण और प्राकृतिक संसाधनों का क्षय धरती के जीवन-संतुलन को खतरे में डाल रहा है। इन समस्याओं का समाधान तभी संभव है जब आने वाली पीढ़ियों में पर्यावरण के प्रति गहरी जागरूकता विकसित की जाए। विद्यालय इस दिशा में सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और शिक्षक इस प्रक्रिया के केंद्रबिंदु। शिक्षक केवल शैक्षणिक ज्ञान ही नहीं देते, बल्कि छात्रों में मूल्य, दृष्टिकोण और जिम्मेदारी की भावना भी विकसित करते हैं। यदि शिक्षक अपने शिक्षण में पर्यावरण शिक्षा को शामिल करें, तो वे ऐसे जिम्मेदार नागरिक तैयार कर सकते हैं जो प्रकृति की रक्षा के लिए सदैव प्रतिबद्ध रहेंगे।

<u>छात्रों में पर्यावरण चेतना विकसित करने में शिक्षक की भूमिका:</u>

1. **शिक्षण के माध्यम से पर्यावरण चेतना का प्रसार:** शिक्षक पाठ्यक्रम में पर्यावरण से जुड़े विषयों को सार्थक रूप से जोड़ सकते हैं। उदाहरण के लिए, विज्ञान की कक्षाओं में छात्र पारिस्थितिकी तंत्र, जैव विविधता और प्रदूषण के प्रभावों के बारे में सीख सकते हैं; भूगोल में जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई और जल-संकट पर चर्चा कर सकते हैं; समाजशास्त्र में पर्यावरणीय नैतिकता, सतत विकास और मानव की जिम्मेदारी पर विचार किया जा सकता है। इन विषयों के माध्यम से शिक्षक छात्रों को यह समझा सकते हैं कि प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा करना क्यों आवश्यक है।

2. **व्यक्तिगत उदाहरण प्रस्तुत करना:** शिक्षक अपने आचरण से छात्रों को प्रेरित कर सकते हैं। यदि शिक्षक स्वयं कागज का पुनः उपयोग करें, बिजली बचाएँ, प्लास्टिक से बचें या कचरे को अलग-अलग करें, तो छात्र भी इन आदतों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित होते हैं। उदाहरण स्वरूप, कक्षा में पुनर्चक्रण की व्यवस्था करना, पानी की बचत पर जोर देना और पर्यावरण-अनुकूल सामग्री का उपयोग करना छात्रों पर गहरी छाप छोड़ता है।

www.dascoaching.in

3. **परियोजनाओं और गतिविधियों के लिए प्रोत्साहित करना:** अनुभवात्मक शिक्षा छात्रों में पर्यावरणीय चेतना विकसित करने का प्रभावी तरीका है। शिक्षक वृक्षारोपण अभियान, कचरे के पुनर्चक्रण कार्यक्रम, स्वच्छता अभियान और ऊर्जा-संरक्षण प्रतियोगिताओं का आयोजन कर सकते हैं। साथ ही, वाद-विवाद, पोस्टर प्रतियोगिता, निबंध लेखन और जागरूकता रैली जैसी गतिविधियाँ भी छात्रों में रचनात्मकता और जिम्मेदारी की भावना उत्पन्न करती हैं। इससे छात्रों का पर्यावरण के प्रति जुड़ाव गहरा होता है।

4. **बाहरी जगत से शिक्षा:** पर्यावरण शिक्षा केवल कक्षा तक सीमित नहीं रहनी चाहिए। शिक्षक छात्रों को उद्यानों, जंगलों, नदियों, झीलों और वन्य अभयारण्यों की शैक्षिक यात्राओं पर ले जा सकते हैं। ऐसे भ्रमण से छात्रों को प्रत्यक्ष अनुभव मिलता है कि प्रकृति कितनी समृद्ध और कितनी नाजुक है। पौधों, जानवरों और पारिस्थितिकी तंत्र को देखकर वे पर्यावरण संतुलन को बेहतर समझ पाते हैं। यह प्रत्यक्ष अनुभव लंबे समय तक स्मरण रहता है और उन्हें संरक्षण के लिए प्रेरित करता है।

5. **नेतृत्व कौशल का विकास:b**शिक्षक छात्रों में नेतृत्व गुणों का विकास कर सकते हैं ताकि वे पर्यावरण संरक्षण में अग्रणी भूमिका निभा सकें। पर्यावरण क्लब, हरित-सेना या छात्र समिति बनाकर शिक्षक उन्हें नेतृत्व के अवसर प्रदान कर सकते हैं। इस प्रकार छात्र न केवल अपने साथियों बल्कि समाज के अन्य लोगों को भी जागरूक कर सकते हैं। जब छात्र समाज में पर्यावरण संरक्षण का नेतृत्व करते हैं, तो व्यापक बदलाव संभव होता है।

<u>उपसंहार</u>: शिक्षक पर्यावरण-सचेत नागरिक बनाने में अत्यंत आवश्यक भूमिका निभाते हैं। उनका कार्य केवल ज्ञान देना नहीं है, बल्कि आदतें, मूल्य और जिम्मेदारी की भावना भी विकसित करना है। शिक्षण में पर्यावरण को शामिल करके, अपने आचरण से उदाहरण प्रस्तुत करके, अनुभवात्मक शिक्षा प्रदान करके और नेतृत्व कौशल विकसित करके शिक्षक छात्रों में पर्यावरणीय चेतना के बीज बोते हैं। यह प्रयास एक सतत और पर्यावरण-अनुकूल समाज के निर्माण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। अतः शिक्षकों को चाहिए कि वे सक्रिय और निरंतर रूप से पर्यावरण शिक्षा को बढ़ावा दें ताकि आने वाली पीढ़ियों के लिए हरित और स्वस्थ विश्व का निर्माण हो सके।

www.dascoaching.in

6. Discuss the importance of Population Education. জনসংখ্যা শিক্ষার গুরুত্ব সম্পর্কে আলোচনা করুন। जनसंख्या शिक्षा का महत्व लिखिए। **2022**

Ans: <u>भूमिका</u>: जनसंख्या शिक्षा समाज के सभी वर्गों के लिए अत्यंत आवश्यक और महत्वपूर्ण विषय है। यह केवल जनसंख्या वृद्धि की जानकारी देने तक सीमित नहीं है, बल्कि परिवार नियोजन, जन्म नियंत्रण, प्रजनन स्वास्थ्य और जनसंख्या वृद्धि का प्राकृतिक संसाधनों तथा पर्यावरण पर प्रभाव समझने का माध्यम भी है। जनसंख्या शिक्षा के माध्यम से लोग यह जान पाते हैं कि उन्हें अपने परिवार का आकार कितना रखना चाहिए, बच्चों के बीच कितना अंतर होना चाहिए और सीमित संसाधनों का उपयोग किस प्रकार टिकाऊ रूप में किया जा सकता है। आज के समय में जब जलवायु परिवर्तन, खाद्य संकट, बेरोज़गारी और शहरीकरण जैसी समस्याएँ सीधे तौर पर जनसंख्या से जुड़ी हैं, तब जनसंख्या शिक्षा का महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है।

<u>जनसंख्या शिक्षा का महत्व:</u>

1. **ज्ञान में वृद्धि:** जनसंख्या शिक्षा लोगों को परिवार नियोजन, जन्म नियंत्रण के तरीकों और प्रजनन स्वास्थ्य के बारे में वैज्ञानिक और स्पष्ट जानकारी देती है। इससे लोग अपने परिवार और समाज के हित में सही निर्णय ले पाते हैं। नियोजित परिवार न केवल माता-पिता के लिए सुविधाजनक होता है, बल्कि बच्चों के संपूर्ण विकास में भी सहायक होता है।

2. **पर्यावरण के प्रति जागरूकता:** तीव्र जनसंख्या वृद्धि से भूमि, जल, वायु और वन जैसे प्राकृतिक संसाधनों पर अत्यधिक दबाव पड़ता है। जनसंख्या शिक्षा लोगों को यह समझने में मदद करती है कि अंधाधुंध जनसंख्या वृद्धि किस तरह वनों की कटाई, प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन और जैव विविधता के नुकसान का कारण बनती है। इस जागरूकता से लोग संसाधनों के संरक्षण और पर्यावरण की रक्षा के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं।

3. **सामाजिक-आर्थिक विकास:** नियंत्रित जनसंख्या वृद्धि समाज और राष्ट्र के संतुलित विकास में सहायक होती है। जनसंख्या शिक्षा यह बताती है कि जनसंख्या नियंत्रण से स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार और आवास जैसे क्षेत्रों में निवेश बढ़ता है। परिणामस्वरूप लोगों की जीवन-स्तर में सुधार आता है और राष्ट्र की प्रगति की गति तेज होती है।

4. **स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता:** जनसंख्या शिक्षा के माध्यम से विशेषकर महिलाओं और युवाओं को मातृ स्वास्थ्य, शिशु स्वास्थ्य, प्रजनन स्वास्थ्य तथा यौन रोगों की रोकथाम के बारे में जानकारी मिलती है। इस जागरूकता से मृत्यु दर घटती है, जीवन प्रत्याशा बढ़ती है और जीवन की गुणवत्ता बेहतर होती है। इसके अलावा स्वास्थ्य सेवाओं पर बोझ भी कम होता है।

5. **गरीबी में कमी:** बड़े परिवार अक्सर सीमित संसाधनों के कारण गरीबी का सामना करते हैं। जनसंख्या शिक्षा छोटे और नियोजित परिवारों के लाभ समझाती है, जिससे परिवार के सदस्यों की आवश्यकताओं को आसानी से पूरा किया जा सकता है। जब कम लोग समान संसाधनों पर निर्भर होते हैं, तब जीवन स्तर ऊँचा होता है और गरीबी कम होती है।

उपसंहार: जनसंख्या शिक्षा किसी भी देश के सर्वांगीण विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। यह न केवल जनसंख्या वृद्धि की गति को नियंत्रित करती है बल्कि समाज को स्वस्थ, संसाधन-संपन्न और पर्यावरण-संवेदनशील भी बनाती है। परिवार नियोजन, जिम्मेदार अभिभावकत्व और संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग के बारे में जानकारी देकर यह शिक्षा प्रगति की नींव को मजबूत बनाती है। अतः इसकी महत्ता को समझना और समाज के प्रत्येक स्तर पर इसका प्रसार करना अनिवार्य है। इसी माध्यम से हम वर्तमान और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक समृद्ध, संतुलित और सतत् भविष्य का निर्माण कर सकते हैं।

7. What are the Global Effects on Environment due to Population Explosion? জনসংখ্যা বিস্ফোরণের ফলে পরিবেশের উপর বিশ্বজনীন প্রভাব কী? जनसंख्या विस्फोट के कारण पर्यावरण पर वैश्विक प्रभाव क्या हैं? **2023, 2024**

Ans: भूमिका: जनसंख्या विस्फोट किसी विशेष क्षेत्र अथवा पूरे विश्व में मानव संख्या की तीव्र वृद्धि को कहा जाता है। 18वीं शताब्दी के औद्योगिक क्रांति के बाद से चिकित्सा विज्ञान, कृषि उत्पादन और उद्योग-धंधों के विकास के कारण मानव जनसंख्या असामान्य रूप से बढ़ने लगी। आज विश्व की जनसंख्या लगभग 8 अरब के करीब पहुँच चुकी है। यह अत्यधिक वृद्धि पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधनों पर गहरा दबाव बना रही है, जिसके परिणामस्वरूप वैश्विक ऊष्मीकरण, वनों की कटाई, जल संकट, प्रदूषण और पारिस्थितिक असंतुलन जैसी गंभीर समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। यदि इस अनियंत्रित वृद्धि पर रोक नहीं लगाई गई, तो यह मानव जीवन और अन्य जीव-जंतुओं के अस्तित्व के लिए खतरा बन सकती है।

पर्यावरण पर जनसंख्या विस्फोट का प्रभाव:

1. **प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव:** बढ़ती जनसंख्या को भोजन, स्वच्छ जल, ईंधन, आवास और कच्चे माल की अधिक आवश्यकता होती है। इसके कारण प्राकृतिक संसाधनों का दोहन उनकी पुनर्निर्माण क्षमता से कहीं अधिक गति से हो रहा है। जल की कमी, समुद्रों में अत्यधिक मछली पकड़ना और ऊर्जा संकट इसके सीधे परिणाम हैं, जो पर्यावरणीय स्थिरता को खतरे में डालते हैं।

2. **वनों की कटाई और जैव विविधता का नुकसान:** कृषि भूमि, आवास और उद्योगों की बढ़ती ज़रूरतों को पूरा करने के लिए विशाल वनों की कटाई की जा रही है। इससे अनगिनत प्रजातियों का प्राकृतिक आवास नष्ट हो रहा है। साथ ही पेड़ों की संख्या घटने से कार्बन अवशोषण क्षमता कम हो रही है, जिससे पर्यावरणीय संतुलन बिगड़ रहा है। जैव विविधता में कमी आने से पारिस्थितिकी तंत्र कमजोर हो जाते हैं और जलवायु परिवर्तन तथा प्राकृतिक आपदाओं के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाते हैं।

3. **वायु और जल प्रदूषण:** जनसंख्या वृद्धि के कारण औद्योगिकीकरण, शहरीकरण और वाहनों के अत्यधिक प्रयोग से प्रदूषण की समस्या और गंभीर हो गई है। हानिकारक गैसों का उत्सर्जन वायु को प्रदूषित करता है, जबकि घरेलू और औद्योगिक अपशिष्ट जल स्रोतों को दूषित करता है। प्रदूषित वायु से श्वसन रोग बढ़ते हैं और दूषित जल से हैजा, डायरिया तथा अन्य जलजनित बीमारियाँ फैलती हैं।

4. **वैश्विक ऊष्मीकरण और जलवायु परिवर्तन:** बढ़ती जनसंख्या ऊर्जा की मांग बढ़ाती है, जिसका अधिकांश भाग जीवाश्म ईंधन से पूरा होता है। इसके परिणामस्वरूप कार्बन डाइऑक्साइड और मीथेन जैसी ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन बढ़ता है, जो वैश्विक ऊष्मीकरण का मुख्य कारण है। इससे समुद्र का जल स्तर बढ़ रहा है, ग्लेशियर पिघल रहे हैं और बाढ़, सूखा व असामान्य मौसम की घटनाएँ बढ़ रही हैं।

www.dascoaching.in

5. **कचरा प्रबंधन की समस्या:** तेजी से बढ़ती जनसंख्या के कारण ठोस और तरल अपशिष्ट की मात्रा लगातार बढ़ रही है। कई देशों में उचित कचरा प्रबंधन प्रणाली के अभाव में कचरा खुले स्थानों पर जमा हो जाता है, नालियाँ जाम हो जाती हैं और मिट्टी व जल स्रोत प्रदूषित हो जाते हैं। गैर-बायोडिग्रेडेबल प्लास्टिक अपशिष्ट एक गंभीर पर्यावरणीय खतरे के रूप में उभरा है, जो समुद्री जीवन को नुकसान पहुँचाता है और पारिस्थितिकी तंत्र को बाधित करता है।

उपसंहार: जनसंख्या विस्फोट मानव सभ्यता के लिए सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक बन चुका है। इसके पर्यावरणीय परिणाम स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे हैं, जैसे वैश्विक तापमान में वृद्धि, वनों का विनाश और प्राकृतिक संसाधनों की कमी। इसके दुष्प्रभावों को कम करने के लिए जन-जागरूकता बढ़ाना, पर्यावरण अनुकूल तकनीकों को बढ़ावा देना और सतत विकास की दिशा में कदम उठाना आवश्यक है। सरकारों को संसाधनों के उपभोग को नियंत्रित करने, उचित कचरा प्रबंधन सुनिश्चित करने और जैव विविधता की रक्षा के लिए कड़े नियम लागू करने चाहिए। साथ ही, व्यक्तिगत स्तर पर अपशिष्ट कम करना, ऊर्जा की बचत करना और परिवार नियोजन अपनाना बेहद जरूरी है। वैश्विक सहयोग और जिम्मेदार व्यवहार से ही हम इस समस्या को नियंत्रित कर सकते हैं और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्वस्थ पर्यावरण सुनिश्चित कर सकते हैं।

8. What is the role of a Secondary School teacher to develop awareness on population explosion and sustainable development among students? বিদ্যালয়ের শিক্ষার্থীদের মধ্যে জনসংখ্যা বিস্ফোরণ ও সুস্থিত উন্নয়ন সম্বন্ধে সচেতনতা বৃদ্ধির জন্য মাধ্যমিক বিদ্যালয়ের শিক্ষকের ভূমিকা কী কী? माध्यमिक विद्यालय के छात्रों में जनसंख्या विस्फोट और सतत विकास के प्रति जागरूकता बढ़ाने में शिक्षक की भूमिका क्या है? **2023, 2024**

Ans: भूमिका: जनसंख्या विस्फोट और सतत विकास (Sustainable Development) आधुनिक युग की दो प्रमुख चुनौतियाँ हैं। तीव्र गति से बढ़ती हुई जनसंख्या पृथ्वी के प्राकृतिक संसाधनों पर अत्यधिक दबाव डाल रही है, जिसके परिणामस्वरूप पर्यावरण प्रदूषण, भोजन और पानी की कमी, वायु प्रदूषण, ऊर्जा संकट और स्वास्थ्य संबंधी गंभीर समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। ये समस्याएँ केवल वर्तमान पीढ़ी को ही नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों को भी विपन्न बना रही हैं। ऐसी स्थिति में शिक्षा और जागरूकता ही सबसे प्रभावी

समाधान है। विशेषकर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक इस विषय पर छात्रों को जागरूक करने और जिम्मेदार नागरिक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उनका कार्य केवल ज्ञान देना नहीं, बल्कि छात्रों को प्रेरित करना और सतत विकास के प्रति संवेदनशील बनाना भी है।

शिक्षक की भूमिका:

1. **ज्ञान और जानकारी प्रदान करना:** शिक्षक छात्रों को जनसंख्या विस्फोट के कारण, इसके दुष्परिणाम और समाज, पर्यावरण एवं अर्थव्यवस्था पर इसके प्रभावों के बारे में विस्तार से जानकारी दे सकते हैं। उदाहरण स्वरूप, वनों की कटाई, शहरी भीड़भाड़, भोजन और पानी की कमी, बेरोज़गारी तथा प्रदूषण से उत्पन्न बीमारियों पर चर्चा की जा सकती है। इससे छात्रों को वास्तविक परिस्थितियों से इस समस्या को जोड़ने में मदद मिलेगी।

2. **प्रेरित करना और उत्साह बढ़ाना:** शिक्षक छात्रों में जनसंख्या नियंत्रण और सतत विकास की महत्ता के प्रति रुचि जगा सकते हैं। सफल देशों और समुदायों के उदाहरण प्रस्तुत करके यह दिखाया जा सकता है कि किस प्रकार सचेत प्रयासों से गंभीर समस्याओं पर काबू पाया जा सकता है। जब छात्र यह समझते हैं कि उनका छोटा सा योगदान भी परिवर्तन ला सकता है, तो वे भविष्य में जिम्मेदारी से कार्य करने के लिए प्रेरित होते हैं।

3. **कक्षा में गतिविधियों का आयोजन:** गहन समझ विकसित करने के लिए शिक्षक वाद-विवाद, समूह चर्चा, प्रश्नोत्तरी, प्रोजेक्ट कार्य, पोस्टर प्रतियोगिता और प्रेज़ेंटेशन जैसी गतिविधियाँ करवा सकते हैं। "जनसंख्या विस्फोट और उसका प्रभाव" या "सतत विकास के उपाय" जैसे विषयों पर चर्चाएँ छात्रों को रचनात्मक और समाधानमुखी सोच की ओर प्रेरित करती हैं। साथ ही, डॉक्यूमेंट्री, शैक्षिक वीडियो और इंटरैक्टिव प्रोग्राम्स का उपयोग भी प्रभावी हो सकता है।

4. **जागरूकता और सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास:** शिक्षक छात्रों को यह समझा सकते हैं कि जनसंख्या वृद्धि केवल संख्या का मामला नहीं है, बल्कि यह सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय सभी पहलुओं से जुड़ा हुआ है। जैसे, अधिक जनसंख्या बेरोज़गारी और गरीबी को बढ़ाती है, जिससे सामाजिक असंतोष पैदा होता है। इस प्रकार की समझ छात्रों में सामाजिक

उत्तरदायित्व की भावना पैदा करती है और उन्हें समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने हेतु तैयार करती है।

5. **पर्यावरण-अनुकूल आदतों को प्रोत्साहित करना:** शिक्षक छात्रों को ऊर्जा की बचत, पानी का संरक्षण, प्लास्टिक का कम उपयोग, पुनः उपयोग और पुनर्चक्रण, वृक्षारोपण और स्वच्छ ऊर्जा का उपयोग जैसी आदतों को अपनाने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। यदि छात्र विद्यालय स्तर पर ही इन आदतों को सीख लेते हैं, तो वे अपने परिवार और समाज में भी इसका संदेश फैलाते हैं।

उपसंहार: जनसंख्या विस्फोट और सतत विकास के प्रति जागरूकता बढ़ाना समाज के लिए अनिवार्य है। माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक इस दिशा में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं क्योंकि वे सीधे छात्रों के जीवन और सोच को प्रभावित करते हैं। यदि शिक्षक छात्रों को सही ज्ञान, व्यावहारिक अनुभव और जिम्मेदारी का भाव देंगे तो वे भविष्य में सजग नागरिक बनकर समाज और विश्व के निर्माण में योगदान देंगे। इसलिए शिक्षकों को चाहिए कि वे इस विषय पर गंभीरता से कार्य करें और छात्रों को पर्यावरण-संवेदनशील, जिम्मेदार एवं जागरूक नागरिक बनने के लिए मार्गदर्शन करें। उनके प्रयास समाज में व्यापक परिवर्तन लाने में सहायक सिद्ध होंगे और एक संतुलित एवं टिकाऊ विश्व के निर्माण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम होंगे।

9. How does 'Women Empowerment' and 'Ecofeminism' is related to Environmental Development? 'নারী ক্ষমতায়ন' এবং 'ইকোফেমিনিজম' (পরিবেশবাদী নারীবাদ) কীভাবে পরিবেশগত উন্নয়নের সাথে সম্পর্কিত? 'महिला सशक्तिकरण' और 'पारिस्थितिकी नारीवाद' (ईकोफेमिनिज्म) पर्यावरणीय विकास से किस प्रकार संबंधित हैं? **2025**

Ans: प्रस्तावना: वर्तमान विश्व में पर्यावरणीय संकट के समाधान और **सतत विकास (Sustainable Development)** के लिए **महिला सशक्तिकरण** और **इकोफेमिनिज्म (पर्यावरणवादी नारीवाद)** अत्यंत महत्वपूर्ण अवधारणाएं हैं। पारंपरिक रूप से यह माना जाता है कि प्रकृति और महिला के बीच एक गहरा और सहज संबंध विद्यमान है। पर्यावरणीय विकास केवल पेड़ लगाने या प्रदूषण कम करने तक

सीमित नहीं है, बल्कि यह एक सामाजिक और राजनीतिक प्रक्रिया है जहाँ महिलाओं और प्रकृति के अधिकार एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं।

१. महिला सशक्तिकरण और पर्यावरणीय विकास: पर्यावरण के संदर्भ में महिला सशक्तिकरण का अर्थ है—पर्यावरणीय निर्णय लेने और प्रबंधन में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी।

1. **संसाधन प्रबंधन और महिला:** ग्रामीण भारत के संदर्भ में, पानी, ईंधन और चारा इकट्ठा करने की मुख्य जिम्मेदारी महिलाओं की होती है। इसलिए, प्राकृतिक संसाधनों के सही उपयोग और संरक्षण में उनका अनुभव अपार है। सशक्त होने पर महिलाएं इन संसाधनों की बर्बादी को रोक सकती हैं।
2. **पर्यावरणीय निर्णय प्रक्रिया:** पंचायत या स्थानीय स्वशासन में महिलाओं की भागीदारी बढ़ने से पर्यावरण के अनुकूल परियोजनाओं (जैसे—वर्षा जल संचयन, वृक्षारोपण) को अधिक महत्व मिलता है।
3. **सतत जीवनशैली:** महिलाएं आमतौर पर परिवार के उपभोग के पैटर्न को नियंत्रित करती हैं। सशक्तिकरण उन्हें पर्यावरण के अनुकूल उत्पादों के चयन और 'अपशिष्ट न्यूनीकरण' (Reduce, Reuse, Recycle) की प्रक्रिया में कुशल बनाता है।

२. इकोफेमिनिज्म या पर्यावरणवादी नारीवाद की अवधारणा: १९७४ में फ्रांसीसी लेखिका **फ्रांस्वा द्युबोन** ने पहली बार 'Ecofeminism' शब्द का प्रयोग किया था। इस दर्शन का मूल आधार यह है कि प्रकृति पर पुरुष प्रधान समाज का प्रभुत्व और महिलाओं पर पुरुषों का शोषण समानांतर है।

1. **प्रकृति और महिला की समानता:** इकोफेमिनिज्म का मानना है कि जिस प्रकार प्रकृति जीवन देती है और पालन-पोषण करती है, महिला भी वैसी ही सृजनशील और देखभाल करने वाली होती है। इसलिए प्रकृति की क्षति अप्रत्यक्ष रूप से महिला के अस्तित्व का संकट है।
2. **पितृसत्तात्मक प्रभुत्व का विरोध:** इस विचारधारा के अनुसार, पूंजीवादी और पितृसत्तात्मक समाज प्रकृति को केवल 'संसाधन' मानता है और महिला को 'अधीन' समझता है। पर्यावरणीय विकास के लिए इस मानसिकता को बदलना जरूरी है।
3. **आंदोलनों में महिलाएं:** भारत के **'चिपको आंदोलन'** या **'नर्मदा बचाओ आंदोलन'** में महिलाओं की स्वतःस्फूर्त भागीदारी इकोफेमिनिज्म के वास्तविक उदाहरण हैं। वे पेड़ों और नदियों को बचाने के लिए अपने प्राण देने को तैयार थीं क्योंकि उनकी आजीविका उसी प्रकृति पर निर्भर थी।

३. पर्यावरणीय विकास के साथ संबंध: महिला सशक्तिकरण और इकोफेमिनिज्म निम्नलिखित तरीकों से पर्यावरणीय विकास से जुड़े हैं-

1. **जलवायु परिवर्तन का मुकाबला:** शोध से पता चला है कि जिन देशों में महिलाओं का राजनीतिक सशक्तिकरण अधिक है, वहां कार्बन उत्सर्जन कम करने के लिए सख्त कानून बनाए जाते हैं।
2. **जैव विविधता की रक्षा:** बीज संरक्षण और पारंपरिक खेती की तकनीकों में महिलाएं पुरुषों की तुलना में अधिक अनुभवी होती हैं। इकोफेमिनिज्म इस पारंपरिक ज्ञान का सम्मान कर जैव विविधता की रक्षा में मदद करता है।
3. **जनसंख्या नियंत्रण:** जब महिलाएं शिक्षित और सशक्त होती हैं, तो प्रजनन स्वास्थ्य पर उनका नियंत्रण बढ़ता है, जो अप्रत्यक्ष रूप से जनसंख्या नियंत्रण और पर्यावरण पर दबाव कम करने में सहायक होता है।
4. **शिक्षा और जागरूकता:** बी.एड (B.Ed.) या शिक्षक प्रशिक्षण में यह महत्वपूर्ण है क्योंकि महिला शिक्षिकाएं अगली पीढ़ी में पर्यावरण के प्रति जागरूकता पैदा करने में अग्रणी भूमिका निभाती हैं।

निष्कर्ष: निष्कर्षत:, पर्यावरणीय विकास कोई एकल विषय नहीं है। महिला समाज की उपेक्षा करके या प्रकृति पर प्रभुत्व जमाकर वास्तविक विकास संभव नहीं है। इकोफेमिनिज्म हमें सिखाता है कि पृथ्वी को बचाने के लिए महिलाओं को निर्णय लेने वाले मुख्य पदों पर लाना होगा। महिला सशक्तिकरण केवल एक सामाजिक मांग नहीं है, बल्कि यह एक स्वस्थ और हरित पृथ्वी के निर्माण की अनिवार्य शर्त है। **सतत विकास लक्ष्यों (SDG)** को प्राप्त करने के लिए महिला, प्रकृति और विकास के बीच संतुलन बनाए रखना २१वीं सदी की मुख्य चुनौती है।

10. Write short notes: i) Agenda- 21, ii) Urbanization and Migration. টীকা লেখো: i) এজেন্ডা-২১, ii) নগরায়ন এবং অভিবাসন। संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए: i) एजेंडा-२१, ii) शहरीकरण और प्रवासन। **2025**

Ans: प्रस्तावना: वर्तमान विश्व में पर्यावरण संरक्षण और जनसंख्या संरचना में परिवर्तन—ये दो विषय अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। सतत विकास के लक्ष्यों को निर्धारित करने में 'एजेंडा-21' जिस प्रकार वैश्विक दिशा-निर्देश प्रदान करता है, उसी प्रकार विकासशील देशों के सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य पर 'नगरीकरण और प्रवासन' गहरा प्रभाव डालते हैं। इन दोनों विषयों पर संक्षिप्त टिप्पणी नीचे दी गई है।

i) एजेंडा-21 (Agenda-21)

- **अवधारणा:** एजेंडा-21 इक्कीसवीं सदी में पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास (Sustainable Development) सुनिश्चित करने के लिए अपनाई गई एक दूरगामी कार्ययोजना है। इसे 1992 में ब्राजील के रियो डी जनेरियो में आयोजित संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण और विकास सम्मेलन (UNCED), जिसे 'पृथ्वी सम्मेलन' के नाम से जाना जाता है, में स्वीकार किया गया था।
- **मुख्य उद्देश्य:**
  1. **गरीबी उन्मूलन:** विकासशील देशों में गरीबी को दूर करना और जीवन स्तर में सुधार करना।
  2. **संसाधन प्रबंधन:** वायुमंडल की रक्षा, वनों का संरक्षण और जैव विविधता को बनाए रखना।
  3. **सतत जीवनशैली:** विकसित देशों के अत्यधिक संसाधन उपभोग को कम कर पर्यावरण अनुकूल जीवनशैली पर जोर देना।
  4. **भागीदारी:** विकास प्रक्रिया में महिलाओं, बच्चों, आदिवासियों और स्थानीय संस्थाओं को शामिल करना।
  5. **प्रौद्योगिकी और वित्त:** पर्यावरण अनुकूल तकनीक का आदान-प्रदान और अल्पविकसित देशों को वित्तीय सहायता प्रदान करना।
- **महत्व:** एजेंडा-21 मुख्य रूप से स्थानीय स्तर (**Local Agenda 21**) पर कार्यान्वयन पर जोर देता है, ताकि प्रत्येक क्षेत्र के लोग अपने पर्यावरण की रक्षा के प्रति जागरूक हो सकें। यह पर्यावरणीय संतुलन और आर्थिक उन्नति के बीच एक सेतु का निर्माण करता है।

ii) नगरीकरण और प्रवासन (Urbanization and Migration)

- **नगरीकरण (Urbanization):** नगरीकरण वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से ग्रामीण बस्तियां धीरे-धीरे शहरों में बदल जाती हैं और लोग शहर-केंद्रित जीवनशैली के अभ्यस्त हो जाते हैं। औद्योगीकरण और बेहतर सेवाओं के आकर्षण से नगरीकरण में तेजी आती है।
- **प्रवासन (Migration):** जब लोग रोजगार, शिक्षा या बेहतर जीवन स्तर की तलाश में एक स्थान से दूसरे स्थान (आमतौर पर गाँव से शहर) पर स्थायी या अस्थायी रूप से चले जाते हैं, तो इसे प्रवासन कहते हैं।
- **नगरीकरण और प्रवासन का अंतर्संबंध:**

www.dascoaching.in

1. **श्रम बाजार का विकास:** गांवों से आने वाले श्रमिक ही शहरों के औद्योगिक और सेवा क्षेत्रों को गतिशील रखते हैं।
2. **जीवन स्तर:** प्रवासन के कारण लोगों को बेहतर चिकित्सा और शिक्षा के अवसर मिलते हैं, जो नगरीकरण को सार्थक बनाते हैं।
3. **सामाजिक परिवर्तन:** विभिन्न संस्कृतियों के लोगों के मिलन से एक मिश्रित संस्कृति का उदय होता है।
4. **नकारात्मक प्रभाव:** अनियोजित प्रवासन के कारण शहरों में झुग्गी-बस्ती की समस्या, भीड़भाड़ वाला वातावरण, वायु प्रदूषण और जल संकट पैदा होता है। अत्यधिक जनसंख्या के दबाव में शहर का बुनियादी ढांचा चरमरा जाता है।

निष्कर्ष: निष्कर्षतः, एजेंडा-21 पृथ्वी के भविष्य की रक्षा का ब्लूप्रिंट है, जो हमें अपने प्राकृतिक संसाधनों को सुरक्षित रखना सिखाता है। दूसरी ओर, नगरीकरण और प्रवासन विकास की अपरिहार्य वास्तविकताएं हैं। हालांकि, इस विकास की गति को टिकाऊ बनाने के लिए जनसंख्या नियंत्रण और नियोजित नगरीकरण अत्यंत आवश्यक है। पर्यावरण और जनसंख्या का सही संतुलन ही अगली पीढ़ी को एक सुंदर पृथ्वी उपहार में दे सकता है।

****

आपको यह ई-बुक कैसी लगी, या यदि आपके पास कोई फीडबैक या सुझाव है, तो कृपया नीचे दिए गए संचार माध्यमों से हमें बताएं या नीचे दिए गए गूगल फॉर्म को भरें। हमें आपके फीडबैक का इंतज़ार रहेगा!

Email: contact.dascoaching@gmail.com
WhatsApp / Arattai: +91 9339697099

FOLLOW OUR WEBSITE REGULARLY FOR MORE UPDATE

www.dascoaching.in Or, https://bedcourse.dascoaching.in/

Send Your Feedback (Your feedback inspires our progress.)**>> Feedback Here**

📢 **Join Our Community**

Stay connected with "**DAS Coaching**" on your favourite platform:

📱 **Join DAS Coaching Official Channel (Arattai)** 📢

Thank You

www.dascoaching.in